॥ * जिनेश्वरायनमः * ॥

॥ पूजावली ॥

—:o:—

जिसको

श्रीमान् सेठजी श्री "केशरीसिंहजी" साहब की आज्ञानुसार प्रकाशित कराकर।

॥ रतलाम में ॥

॥ श्री जैन "प्रभाकर-यन्त्रालय" प्रेस में छपी ॥

वीर संवत् २४३६ विक्रम संवत् १९६५ का

सन् १९०९

पहिली बार २०००) (निछरावल ।-)

—:÷:—

❀ प्रस्तावना ❀



विदित होकि इस पंचमकाल में भविक लोगोंके कल्याण कारक कैयक साधन पूर्वाचार्यों नें नियत किये हैं उसमें से तीन बात मुख्य निरधार करने में आई है अन्न दान,जलदान,प्रियवाक्य प्रदान-अर्थात् ज्ञानदान करना ये तीन साधन सारभूत है सो ज्ञानदान का निर्वाह पाठ शालाके विना होना मुश्किल है ऐसा विचार कर श्री स्वर्गवासी **चांदमलजी** की संकल्पित पाठशालाश्री अनन्त उपमा योग्य श्री **यशमुनिजी** महाराज की प्रेरणासे श्री जिनदत्त पाठशाला नामसे श्रीमान् **केशरीसिंहजी** साहब की आज्ञा से इस वर्ष में खोलने में आई है इस पाठशाला के विद्यार्थीयों के लाभार्थ यह "**पूजावली**" नाम पुस्तक कैयक पुस्तकोंसे शुद्धकराकर "**श्री जैन प्रभाकर प्रेस में**" छपाकर प्रसिद्धकी यह पुस्तक विद्यार्थीयों को अमूल्य देनेमें आवेगी—व और साहबों को अगर जरुरत पडेगी तो उनको ऊपर टाइटल के लिखी कीम्मत से वी. पी. द्वारा भेजने में आवेगा डाकव्यय अलग पडेगा.।

—:संशोधकः—

आपका कृपाभिलाषीः—

पण्डित "विष्णुप्रशाद शर्म्मा" रतलाम.

पत्ताः—श्री जंगम युगप्रधान श्री जिनदत्त पाठशाला.

रतलाम. (मालवा)

॥ श्री ॥

॥ अथ अनुक्रमणिका ॥

॥ इत्यनुक्रमणिका समाप्ता ॥

|| श्री वीतरागायनमः ||

|| अथ श्रीस्नात्रपूजाप्रारभ्यते ||

|| अथ मङ्गलाचरणम् ||

णमो अरिहंताणं ।
णमो सिद्धाणं ।
णमो आयरियाणं ।
णमो उवज्झायाणं ।
णमो लोए सव्वसाहूणं ।
एसो पंच णमुक्कारो ।
सव्व पाव पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं ।
पढमं हवई मंगलम् ।

|| पांखरी गाथा ||

चौतीसं अतिशय जुर्ज, वचनातिशय संजुत्त ।
सो परमेश्वर देखि जवि, सिंहासण संपत्त || १ ||

|| ढाल ||

सिंहासण बैठा जग भाण । देखीजवियण गुण मणि खाण || जे दीठे तुझ निम्मल जाण || लहिये परम महोदय गण || कुसुमांजलि मेलो आदि

जिणन्दा ॥ तोरा चरण कमल चौवीस पूजोरे चौवीस सोभागी चौवीस वेरागी चौवीस जिणंदा॥ कुसुमांजलि मेलो आदि जिणंदा ॥

ॐ—ह्रीं परमात्मने अनन्तानन्ताऽज्ञानसक्ते जन्म जरा मत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेंन्द्राय (यह पढ-कर भगवंतके चरणमें टीकी दीजे)

॥ गाथा ॥

जो निजगुण पज्जव रम्यो, तसु अनुभव एगत्त ॥
सुह पुग्गल आरोपतां, ज्योतिसुरंग निरत्त ॥

॥ ढाल ॥

जो निज आतम गुण आनंदी, पुग्गल संगे जेह अफंदी । जे परमेश्वर निज पद लीन, पूजो प्रणमो भव्य अदीन ॥ कुसुमांजलि मेलो शांतिजिणंदा॥ तोरा चरण कमल चौवीस पूजोरे चौवीस सोभागी चौवीस वेरागी चौवीस जिणंदा कुसुमांजलि मेलो शान्ति जिणंदा । ॐ० ॥ गोकांटीकीदीजे ।

॥ गाथा

निम्मल नाण पयास कर । निम्मल गुण संपन्न ।
निम्मल धम्मु वएस कर । सो परमप्पा धन्न ॥

॥ ढाल ॥

लोकालोक प्रकाशक नाणी । भविजन तारण

जेहनी वाणी । परमानंद तणी निसाणी तसु जगतें सुरूमति ठहराणी । कुसुमांजलि मेलो नेमि जिणंदा ॥ तोरा चरण कमल चौवीस पूजोरे चौवीस सोभागी चौवीस वेरागी चौवीस जिणंदा ॐ० ॥

॥ गाथा ॥

जे सिद्धा सिज्झन्तितते । सिज्झिस्सन्ति अनंत । जसु आलंबन ठविय मन । सो सेवो अरिहंत ।

॥ ढाल ॥

शिव सुख करण जेह त्रिकाले । सम परिणामे जगत निहाले ॥ उत्तम साधूनो मार्ग दिखाले, इन्द्रादिक जसु चरण पखाले ॥ कुसुमांजलि मेलो पार्श्व जिणंदा तोरा चरण कमल चौवीस पूजोरे चोवीस सोभागी चौवीस वैरागी चौंवीस जिणंदा कुसुमांजलि मेलो पार्श्व जिणंदा, ॐ—ह्रीं० ॥

॥ गाथा ॥

सम्मदिट्ठी देसंजय । साहु साहुणी सार । आचारज उवज्झाय मुणि । जो निम्मल आधार ॥

॥ ढाल ॥

चौविह संघे जे मन धार्‍यो । मोक्षतणो कारण निरधार्‍यो । विविह कुसुम वर जाति गहेवी । तसु चरणे प्रणमन्त ठवेवी, कुसुमांजलि मेलो वीर

जिणंदा तोरा चरण कमल चौवीस पूजोरे चौवीस सोजागी चौवीस वेरागी चौवीस जिणंदा कुसुमां जलि मेलो वीर जिणंदा ॥ ॐ० ॥ चमरलीज ।

॥ इति पांचमी गाथा ॥

॥ वस्तु ॥

सयल जिनवर सयल जिनवर नमिय मनरंग । कल्लाणक विह संठ विय करिय सुधम्म सुपवित्त सुंदर ॥ सय इक सत्तरि तित्थंकर । इक समे वि-हरंत महियल । चवण समै इकवीस जिण । ज-न्म समै एकवीस । नत्तिय नावे पूजिया । करो संघ सुजगीस ॥ १ ॥

॥ इक दिन अचिराहुलरावती—ए—देशी ॥

जव तीजे समकित गुण रम्या । जिन जक्ति प्रमुख गुण परिणम्या । तजि इन्द्रिय सुख आसंसना । करि थानक बीसनी सेवना । अतिराग प्रशस्त प्रजावता । मन जावना एहवी जावता । सवि जीव करूं शासन रसी । इसी जाव दया मन उल्लसी । लहि परिणाम एहवुं जलुं । निपजावी जिनपद निरमलुं । आऊ बंध विचै इक जव करी । श्रद्धा संवेगथी थिरधरी । तिहांथी चविय लहै नर जव उदार । जरते तिम ऐरवतेज सार । महा विदेह विजय प्रधान । मज्झ खएरू अवतरे जिननिधान ॥

॥ ढाल ॥

पुण्ये सुपनाइ देखे ॥ मनमे हर्ष विशेषे गजवर उज्जल सुन्दर । निर्मल वृषभ मनोहर निर्भय केसरी सिंह । लक्ष्मी अतिहि अबिह अनुपमा फूलनी माल । निर्मल शशि सुकमाल । तेज तरण अति दीपै । इन्द्र ध्वजा जगजीपै । पूरण कलश पंकूर । पद्म सरोवर पूर । इग्यारमें रयणायर देखे। माताजी गुण सायर । बारमें भुवन विमान। तेरमें रत्न निधान। अग्नि शिखानिर्धूम । देखे माताजी अनुपम । हरखी रायने भासे। राजा अर्थ प्रकाशे। जगपति जिनवर सुख कर। होसे पुत्र मनोहर । इन्द्रादिक जसु नमस्ये। सकल मनोरथ फलस्ये ।

॥ वस्तु ॥

पुण्यउदय पुण्य उदय ऊपना जिणनाह, माता तव रयणी समें देखि सुपन हरखंत जागिय। सुपन कही निज कंतने सुपन अरथ सांभली सोत्ता गिय त्रिभु-वन तिलक महा गुणी। होस्ये पुत्र निधान इन्द्रा दिक जसु पाय नमी करस्ये सिद्ध निधान ॥

॥ ढाल चन्द्रा-उल्लालानी ॥

सोहम पति आसन कंपियो । देई अवधे मन आणंदियो । मुक्त आतम निर्मल करण काज ।

भवजल तारण प्रगट्यो जिहाज। भव अरुवी पारग सत्थ वाह। केवल नाणा इहगुण अगाह शिव,साधन गुण अंकुर जेह। कारण उलट्यो आषाढ मेह। हरखे विकसे तव रोमराय। वलयादिकमां निजतनु न माय सिंहासनथी उठ्यो सुरिंद। प्रणमन्तो जिण आनन्द कन्द। सग अरूपय पमुहा आवि तत्थ। करि अञ्जलि प्रणमिय मत्थ सत्थ। मुख भाखे ऐखिण आज़ सार। त्रिय लोय पहुदीठो उदार। रे रेनि सुणोसुर लोय देव। विषयानल तापित तुम सभेव। तसु शांति करण जलधर समान। मिथ्या. विष चूरण गरुरुवान। ते देव सकल तारण समत्थ। प्रगट्यो तस प्रणमी यहुवो सनत्थ। इम जम्पी शक्र स्तव करेवी। तव देव देवी हरखे सुणेवि, गावे तव रंभा गीत गान। सुरलोक हुवो मंगलनिधान। नर खेत्रे आरजवंश ठाम। जिनराज वधे सुर हर्ष धाम। पिता माता घेर उच्छव अलेष। जिन शासन मंगल अति विशेष। सुरपति देवादिक हर्षसंग। संयम अरथी जनने उमंग। शुभवेला लगने तीर्थनाथ। जनम्या इन्द्रादिक हर्ष साथ। सुखपाम्या त्रिभुवन सर्व जीव। बधाई बधाईथई अतीव॥ (तीनप्रदक्षिणादेकर यहां चैत्य वंदन करणा धूप खेवना)।

॥ ढाल ॥

श्रीतीर्थ पतिनो कलश मज्जन गाइये सुखकार॥

नर खेत्त मंकन डुह विहंकन नविक मन आधार ॥
तिहां राव राणा हर्ष उच्छव थयो जग जयकार
दिशि कुमरि अवधि विशेष जाणी लह्यो हर्ष अपार।
निय अमर अमरी संग कुमरी गावती गुण छंद ॥
जिन जननी पासे आवी पोंहत्ति गहकती आणंद
हे माय तें जिन राज जायो शचिवधायो रम्ह अम्ह
जम्ह निर्म्मल करण कारण करिस सुइय कम्म
तिहां चूमि शोधन दीप दर्पण वाय विंजण धार।
तिहां करिय कदली गेह जिनवर जननी मज्जन
कार। वर राखरी जिन पाणी बांधी दिये इम
आसीस, जुग कोड़ाकोड़ी चिरंजीवो धर्म दायक ईश॥

॥ ढाल इकवीसानी ॥

जग नायकजी त्रिभुवन जन हित करए। परमा-
तमजी चिदानन्द घन सारए। जिन रयणीजी
दशदिस उजलता धरे। शुभ लगनेजी ज्योतिष चक्र-
ते संचरे। जिन जनम्याजी जिन अवसर माता घरे
तिण अवसरजी इन्द्रासन पिण थरहरे॥

॥ त्रोटक ॥

थर हरे आसनइन्द्र चिंतै कवण अवसर एवण्यो॥
जिन जन्म उच्छव काल जाणी अतिहि आनन्द ऊप
नो॥ निज सिरू सम्पत्ति हेतु जिनवर जाणिजगते ऊम
ह्यो॥ विकसंत वदन प्रमोद वधतेदेव नायक गहगह्यो॥

॥ ढाल ॥

तबसुरपतिजी घंटानाद करावए ॥ सुरलोकेजी घोषणा एह दिरावए । नरखेत्रेजी जिनवर जन्म हुवो अछे । तसु भगवंतेजी सुरपति मन्दर गिरगछे ॥

॥ त्रोटक ॥

गच्छे मन्दिर शिखर ऊपर भवन जीवन जिनतणो । जिनजन्म उच्छव करण कारण आवज्यो सवि सुरगणो । तुम शुद्ध समकित थास्ये निर्मल देवाधिदेव निहालतां ॥ आपणा पातिक सर्व जास्ये नाथ चरण पखालतां ॥

॥ ढाल ॥

इम सांभलजी सुरवर कोडी बहु मिली ॥ जिन वन्दन जी मन्दरगिरि साहमी चली ॥ सो हमपतिजी जिन जननी घर आविया । जिन माताजी वन्दी स्वामी वधाविया ॥

॥ त्रोटक ॥

वधाविया जिनवर हर्ष बहुले धन्यहुं कृत पुण्य ए ॥ त्रैलोक्य नायक देव दीठो मुझ समो कुण अन्यए ॥ हे जगत जननी पुत्र तुमचो मेरु मज्जन वर-करी ॥ उच्छंग तुमचे वलिय थापिस आत्मा पुण्ये भरी ॥

॥ ढाल ॥

सुर नायकजी जिन निजकर कमलें ठव्या ॥ पांच रूपेजी अतिशय महिमायें स्तव्या ॥ नाटक विधिजी तव बत्तीस आगल वहे । सुर कोमीजी जिन दरशण ने ऊमहे ॥

॥ त्रोटक ॥

सुर कोम कोमी नाचती वलि नाथ शुचि गुण गावती ॥ अपसरा कोमी हाथ जोमी हाव भाव दिखावती ॥ जय जयो तूं जिनराय जगगुरु एम दे आसीस ए ॥ अह्म त्राण शरण आधार जीवन एक तूं जगदीश ए ॥

॥ ढाल ॥

सुर गिरिवरजी पांडुक वनमें चिहुं दिसे । गिरि सिलपरजी सिंहासन सासय वसे ॥ तिहां आणीजी शकें जिन खोले ग्रह्या । चउसठंजी तिहां सुरपति आवी रह्या ॥

॥ त्रोटक ॥

आविया सुरपति सर्व जगतें कलश श्रेणी वणाव ए ॥
सिद्धार्थ पमुहा तीर्थ ऊपधि सर्ववस्तु अणाव ए ॥
अच्चुय पति तिहां हुकम कीनो देव कोमा कोमीनें ॥
जिन मज्जनारथ नीर ल्यावो सर्वे सुर कर जोमिने ॥

॥ ढाल ॥

(शान्तिने कारणे इन्द्र कलशा भरे.)

आत्म साधन रसी देवकोमी हसी । उह्न सीने धसी खीरसागर दिशी । पउमदह आदि दहगंग पमुहा नई । तीर्थ जल अमललेवा भणी ते गई । जाती अडकलश करि सहस अगोत्तरा छत्र चामर सिंहासणे शुभतरा । उपगरण पुप्फ चंगेरी पमुहा सवे । आगमे भासिया तेम आ णिठवे। तीर्थ जल भरिय करि कलश करि देवता। गावतां भावतां धर्म्म उन्नतिरता । तिरिय नर अम रने हर्ष उपजावतां । धन्य अह्म शक्ति शुचि भक्ति इम भावतां । सम्कित वीज निज आत्म आरो पतां । कलश पाणी मिस भक्ति जल सींचतां । मेरु सिहरो वरे सर्व आव्या वही । शक्र उछंग जिन देखि मन गहगहीं ।

॥ गाथा ॥

हंहो देवा अणाइ। कालो अदिठ पुव्वो। तिलोय तारणो। तिलोय वंधु। मिच्छत्त मोह विद्धंसणो। आ णाई तिण्हा विणासणो । देवाहि देवो दिठ्ठव्वो हियय कामेहिं ।

॥ ढाल ॥

एम पभणंत वण भुवन जो ईश्वरा। देव वैमा

णिया जत्ति धम्मायरा। केवि कप्पठिया केवि मित्ता णुगा केई वर रमण वयणेण अइ उच्छगा ॥

॥ वस्तु ॥

तत्थु अच्चुय तत्थु अच्चुय इन्द्र आदेश। कर जोडी सब देवगण। लेई कलश आदेश पामिय। अद्भूत रूप स्वरूप जुय। कवण एह पुछंत सामी य ॥ इन्द्र कहे जगतारणो। पारग अम्ह परमेश। नायक दायक धर्म निधि। करिये तसु अभिषेस ॥

॥ ढाल ॥

(तीर्थ कमलवर उदक भरीनें पुष्कर सागर आवे)
ए–देशी–

पूर्ण कलश शुचि उदकनी धारा। जिनवर अंगे न्हामें। आतम निर्मल भाव करंता वधते शुभ परिणामें। अच्युतादिक सुरपति मज्जन लोकपाल लोकान्त॥ सामानिक इन्द्राणी पमुहा इम अभिषेक करंत ॥ पू०॥ ॥ १ ॥ तव ईशान सुरिंदो सक्कं पभणेइ करिसु सुपा सावो ॥ तुम्ह अंके महनाहो। खिणमित्तं अम्ह अप्पेह ॥ २ ॥ तासक्किंदो पभणेइ॥ साहम्मि वछलम्मि बहुलाहो आणाइ वं तेणं गिएहइ होइ कयत्थाभो ॥ ३ ॥ कलशढाले।

॥ ढाल ॥

सोहम सुरपति वृषभ रूप कर॥ न्हवण करे प्रभु

अंगे ॥ करिय विलेपन पुष्पमाल ठवी । वरआजरण अजंगे ॥ सो० ॥ तव सुरवर वहु जय जय रव करै । निश्चे धरि आणन्द ॥ मोक्ष मारग सारथ पति पास्यो। जाजस्यूं हिव भव फंद ॥ सो० ॥ कोम वत्तीस सोवन उवारी । वाजंते वरनाद ॥ सुरपति संघ अमर श्रीप्र- जुने ॥ जननीने सुप्रसाद ।सो०। आणा थापी एमपयंपे अम्ह निस्तरिया आज ॥ पुत्र तुमारो धणी हमारो तारण तरण जिहाज ॥ सो० ॥ मात जतन करि रा- खज्यो एहनें ॥ तुम सुत हम आधार ॥ सुरपति जक्ति सहित नन्दीश्वर। करै जिन जक्ति उदार ॥ सो० ॥ नियनिय कप्प गया सहु निर्ज्जर ॥ कहतां प्रजु गुणसार ॥ दिक्षा केवल ज्ञान कल्याणक । इच्छा चित्त मझार ॥ सो० ॥ खरतर गच्छ जिन आणा रंगी। राजसागर उवज्ञाय ॥ ज्ञान धर्म दीपचंद सुपाठक । सुगुरु तणे सुपसाय । सो०। देवचंद निज जक्तें गायो जन्म महोच्छव छंद ॥ बोधबीज अंकुरो उल्लस्यो ॥ संघ सकल आणंद ॥ सो० ॥ इति स्नात्रपूजा० ॥ सम्पूर्ण ॥

॥ राग-बिलावल ॥

इम पूजा जगतें करो ॥ आतम हितकाज तजीय विजाव निज जावना । रमतां शिवराज ॥ इम०॥ १ ॥ काल अनंते जे हुवा ॥ होस्ये जेह जिणंद ॥ संपई श्रीमंदर प्रजु ॥ केवल नाण दिणंद ॥ इम० ॥ २ ॥

जन्म महोच्छव इण परे ॥ श्रावक रुचिवंत । विरचे जिनप्रतिमा तणो ॥ अनुमोदन खंत ॥ इम० ॥ ३ ॥ देवचंद जिनपूजना ॥ करतां भवनो पार ॥ जिन पडिमा जिन सारखी ॥ कही सूत्र मझार ॥ इम० ॥ ॥ ४ ॥ इति स्नात्रपूजा विधिः ॥

॥ अथ अष्टप्रकारी पुजा लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

गंगा मागधक्षीरनिधि, ओषध मिश्रितासार ॥
कुसुम वासित शुचिजले, करो जिनस्नात्र उदार ॥१॥

॥ ढाल ॥

मणि कनकादिक अडविध करि भरि कलश सकार । शुभरु चिजे जिनवर नमें तसु नाहै दुरितप्र चार । मेरु शिखर जिम सुरवर जिन वर न्हावण अमान । करतां वरतां निजगुण समकित वृद्धि निधान ॥ २ ॥

॥ छंद ॥

हर्ष भरि अप्सरा वृन्द आवे ॥ स्नात्र करि एम असीस भावे ॥ जिहां लगे सुर गिरी जंबुदीवो । अमतणा नाथ जीवातु जीवो ॥ ३ ॥

॥ श्लोक ॥

विमल केवल भासन भास्करं जगति जंतु महो

द्य कारणं ॥ जिनवरं बहुमान जलौघतः शुचिमनः स्नपयामि विशुद्धये ॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्म जरामृत्यु निवारणाय । श्रीमज्जिनेन्द्राय जलं यजामहे स्वाहा ॥१॥ इति जलपूजा ॥

॥ अथ चन्दन-पूजा ॥

दोहा ॥ बावना चंदन कुमकुमा । मृगमद ने घनसार ॥
जिनतनु लेपै तसु टले । मोह संताप विकार ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

सकलात्मताप निवारण तारण सहु भवि चित्त ॥ परम अनीहा अरिहा तनु चरचो भवि नित्त ॥ १ ॥ निजरूपें उपयोगी धारी जिनगुणगेह । भाव चंदन सुह भावथी टालै दुरित अछेह ॥ २ ॥ चाल० । जिन तनु चरचतां सकल नाकी । कहै कुग्रह उणाता आज थाकी । सफल अनिमेषतां आजझांकी ॥ भव्यता अह्म तणी आज पाकी ॥३॥

॥ श्लोक ॥

सकल मोह तिमिर विनासनं । परम शीतल भाव युतं जिनं ॥ विनय कुंकुम चंदन दर्शने । सहज तत्व विकाश कृतेच्चये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमा० अनन्ता० ज्ञान० जन्म जरा० निवा० श्री मज्जिने० चंदनं यजामहे स्वाहाः इति यह कहकर चंदन चढावे ❋

॥ अथ नवअंगि भाव पूजा ॥

॥ दोहा ॥

पर उपगारी चरणकंज अनंत सक्ति स्वय मेव । इयांथी प्रथम पूजीये आतम अनुभव सेव ॥ १ ॥ जानु पूजा दूसरी समाधि भूमिका जान । आतम साधन ज्ञानसे शुद्ध दशा पहिचान ॥ २ ॥ करपूजा जिनराजकी दियो संवच्छरी दान । लेकर मुझ मस्तक ठवुं पहुंचे पद निरवाण ॥ ३ ॥ भुजबल सक्ती जानके पूजाकरूं चितलाय । रागादि मल्ल हठायके आतम गुण दरसाय ॥ ४ ॥ सिरपूजा महाराजकी लोक सिरोमणि भाव। चउगति गमन मिटायके पंचमगति संभाय ॥ ५ ॥ लिलवट पूजा सार है तिलक विधिविश्राम । वदन कमल वाणि सुणे प्रगटे निज गुण धाम ॥ ६ ॥ कंठ पूजा है सातमी वचनातिसय वृन्द । सप्तभेद पंयतीसश्रुत अनुभव रस नोकन्द ॥ ७ ॥ हृदय कमल की पूजना सदा वसि चित मांहि । गुनविवेक जागेसदा ज्ञान कला घट ठाय ॥ ८ ॥ नाभी मंगल पूजके पोडश दलको भाव। मन मधुकर मोहिरह्यो । आनंदघन चित लाय ॥ इति चन्दन पूजा समासम् ।

———:○:———

॥ अथतृतीय पुष्प पूजा ॥

॥ दोहा ॥

शतपत्री वरमोगरा । चंपक जाइ गुलाव ॥ केत की दमणी वोलसिरि । पूजो जिनवरि भाव ॥१॥

॥ ढाल ॥

अमल अखंडित विकसित सुकुसुमन घन जाति । लाखीणोटोकरभवी अंगीरची वहुभांति ॥ गुण कुसुमें निज आतम मंडित करवाभव्य । गुण रागी जकत्यागी पुष्प चढावो भव्व ॥ २ ॥ चाल ॥ जग धणी पूजतां विविध फूले । सुर वराते गिणे कुण अमूले ॥ खन्तिधर मानवा जिन पद पूजै । तसुत णा पाप सन्ताप धूजे ॥ ३ ॥

॥ श्लोक ॥

विकच निर्मल शुद्धमनोरमैर्विशद चेतन भाव समुद्भवै । सुपरिणाम प्रसून घनैर्नवै ॥ परम तत्त्व मयंहियजामहे ॥ १ ॥ ओं ह्रीं परमात्मने० पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ इति पुष्प पूजा ॥

॥ अथ धूपपूजा ॥

॥ दोहा ॥

कृष्णागरु मृगमद तगर, अंवर तुरकलोभान । मेल सुगंध घनसारघन, करो जिनने धूपदान ॥१॥

॥ ढाल ॥

धूपघटी जिम महमहे तिम दहे पातक वृन्द । अरति अनादिनी जावे पावे मन आनन्द ॥ १ ॥ जेजिन पूजे धूपे नव कूपे फिरतेह । नावेपावे ध्रुव घर आवे सुक्ख अछेह ॥ २ ॥ चाल ॥ जिनघरे वासनां धूपपूरे । मिछत्त दुर्गंधता जाई दूरे ॥ धूप जिम सहज ऊर्द्धगति स्वभावे । कारिका उच्चगति भाव पावे ॥ ३ ॥

॥ श्लोक ॥

सकलकर्म्म महेंधन दाहनं विमल संवर भाव सुधूपनं॥ अशुभ पुद्गल संगविवर्जितं । जिनपतेः पुरतोस्तु सुहर्पितः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥ इति धूपपूजा ॥ धूप अगर बत्ती खेवे ।

॥ अथ दीपपूजा ॥

॥ दोहा ॥

मणिमय रजत ताम्रना, पात्र करी घृतपूर ।
वाती सूत्र कसूंबनी, करो प्रदीप सनूर ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

मंगलदीप वधाओ गाओ । जिन-गुणगीत । दीप तणी जिम आलिका मालिका मंगलनीत । दीप

तणी शुभ ज्योति द्योति जिनमुख चंद ॥ निरखि हरखो भविजन जिम लहो पूर्णानन्द । १ । चाल । जिन गृहे दीपमाला प्रकाशैं । तेहथी तिमिर अज्ञान नाशैं । निजघटै ज्ञान ज्योति विकाशैं । तेह थी जगतणा भावभासे ॥ २ ॥

॥ श्लोक ॥

भविक निर्म्मल बोधविकाशकं । जिन गृहे शुभ दीपक दीपनं । सुगुण राग विशुद्ध समन्वितं । दधतु भाव विकाश कृतेजनाः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० ॥ दीपं यजामहे स्वाहा ॥ इति दीप पूजा ॥ मंगल दीप चढावे ॥

॥ अथ अक्षत पूजा ॥

॥ दोहा ॥

अक्षत अक्षत पूरसूं । जे जिन आगे सार ।
स्वस्तिक रचतां विस्तरै, निजगुण भर विस्तार॥१॥

॥ ढाल ॥

उज्जल अमल अखण्डित मण्डित अक्षत चंग । पूंजत्रय करी स्वस्तिक आस्तिक भावै रंग ॥ निज सत्ताने सन्मुख उनमुख भावै जेह । ज्ञानादिक गुण गावै भावै स्वस्तिक एह ॥ १ ॥ चाल ॥ स्वस्तिक पूरतां जिनप आगैं । स्वस्ति श्रीभद्र कल्याण

जागे । जन्म जरा मरणादि अशुभ नागें । नित्य शिव शर्म रहे तासु आगे ॥ ३ ॥

॥ श्लोकः ॥

सकल मंगल केलि निकेतनं परममंगल जावम यं जिनं ॥ श्रयति जव्य जना इति दर्शयन् दधतु नाथ पुरोक्त स्वस्तिकं ॥ १ ॥ ओं ह्रीं परमात्मने० । अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥ इति अक्षत पूजा । अखंड चावल चढावें ।

॥ अथ नैवेद्य पूजा ॥

दोहा ॥

सरस सुचीपकवान बहु । शालि दालि घृत पूर ॥
धरो नैवेद्य जिन आगले । क्षुधा दोप तसु दूर ॥१॥

॥ ढाल ॥

लपनश्री वरघेवर मधुतर मोतीचूर । सिंहकेसरिया सेविया दालिया मोदक पूर । साकर डाख सिंघोडा जक्ति व्यंजन घृत सद्य । करो नैवेद्य जिन आगलै । जिम मिलै सुख अनवद्य ॥ २ ॥ चाल ॥ ढोवतां जोज्य परजाव त्यागे । जविजना निज गुण जोज्य मांगे ॥ अह्मतणी अह्म तणी सरूप जोज्य । आपज्यो तातजी जगत पूज्य ॥ ३ ॥

श्लोकः ॥

सकल पुद्गलसंग विवर्जितं । सहज चैतन भावविलासकं । सरसभोजननव्य निवेदनात् परम निर्वृति भावमहंस्पृहे ॥ १ ॥ ओंह्रीँ परमात्मने० ॥ नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति नैवेद्य पूजा नैवेद्य मिठाई पक्वान्न चढावै ।

॥ अथ फलपूजा ॥

दोहा ॥

पक्क बिजोरुं जिनकरे, ठवतां शिवपद देई ।
सरस मधुर रस फल गिणें, इह जिन भेटकरेई ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

श्रीफल कदली सुरंग नारंगी आंबा सार। अंजीर जंबीर दाडिम करणा खदबीज सफार ॥ १ ॥ मधुर सुस्वादित उत्तम लोक आणंदित जेह । वरण गन्धादिक रमणीक बहुफल ढोवे तेह॥२॥ चाल०। फलभर पूजतां जगत स्वामी । मनुज गति वेहले सफल पामी । सकल मनुष्येय गतिभेद रंगै । ध्यावतां फलसमाप्ति प्रसंगै ॥ ३ ॥

॥ श्लोकः ॥

कटुक कर्म विपाक विनाशनं । सरस पक्वफलं व्रज ढौकनं । वहति मोक्ष फलस्य प्रभोः पुरः

कुरुत सिद्ध फलाय महाजनाः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने फलं यजामहे स्वाहा। इति फलपूजा ॥ श्रीफल सुपारी नीलाफल प्रमुख चढावे।

॥ अथ अर्घ्य पूजा ॥

॥ दोहा ॥

इम अष्टविध जिनपूजना, विरचै जे थिरचित्त।
मानव भव सफलो करै, बाधै समकित वित्त ॥

॥ ढाल ॥

अगणित गुणमणि आगर नागर वंदितपाय।
श्रुतधारी उपकारी श्रीज्ञान सायर उवझाय॥ १ ॥
तासु चरण कंज सेवक मधुकर पद लयलीन। श्री-जिन पूजा गाई जिन वाणी रसपीन॥ २॥ चाल०॥ संवत गुण युग अचल इन्दु। हर्ष भरि गाइयो श्री-जिनेन्दु। तासु फल सुकृतथी सकल प्राणी। लहे ज्ञान उद्योत धन शिव निशाणी ॥ ३ ॥

॥ श्लोकः ॥

इति जिनवरवृन्दं भक्तितः पूजयन्ति। सकल गुण निधानं देवचन्द्रः स्तुवन्ति। प्रति दिवस मनंतं तत्त्वमुल्लासयंति परम सहज रूपं मोक्ष सौख्यं श्रयन्ति ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने अर्घ्यं यजामहे—स्वाहा! चारें खूंणें धार दीजे॥ इति अर्घ्यपूजा ॥

॥ अथ वस्त्र पूजा ॥

(वस्त्र लेके खडारहै ॥ और यह श्लोक पढे)
शक्रो यथा जिनपतेः सुरशैल चूला ॥ सिंहासनो परिमिता स्नपना वसाने ॥ दध्यक्षतैः कुसुम चंदन गन्धधूपैः कृत्वार्चनं तु विदधाति सुवस्त्र पूजां ॥ १ ॥ तद्वत् श्रावक वर्ग एष विधिना लंकार वस्त्रादिकं पूजा तीर्थ कृतां करोति सततं शक्त्या तिभक्त्याहतः ॥ नीरागस्य निरंजनस्य विजिता रातेस्त्रिलोकी पतेः स्वस्यान्यस्य जनस्य निर्वृतिकृते क्लेशक्षया कांक्षया ॥ ॐ ह्रीं० परमात्मने० । वस्त्रेण यजामहे स्वाहा ॥ वस्त्रचढावे इति अष्ट प्रकारी पूजा ॥

॥ अथ निमक उतारण पूजा ॥

अहपडिभग्गपसरं । पयाहिणं मुणिवयं करिऊणं, पडइसलूणत्तण लजियंच ॥ लूणंहु अवहरंति ॥ १ ॥
पिरकेविणुं मुह जिनवरह । दीहर नयणसलूण ॥
न्हावइ गुरुमबहजरिय । जलणपइस्सइ लूणं ॥ २ ॥
लूणउतारिह जिणवरह । तिन्निपयाहिणिदेव ॥
तडतड शब्द करंतिये । विज्जाविज्जजलेण ॥ ३ ॥
जंजेण विज्जवधुई । जलेण तंतहइ अत्थसहस्स ॥
जिण रूवा महरेणवि । फुट्टइ लूणं तडतडस्स ॥४॥
ए गाथा कही लूण अग्निशरण करै । पीछे लूण पाणी लेई ॥ मुखें ए गाथा कहे । सव्वत्ति मुणवई जल

विजल ॥ तंतह जमरूइ पास। अह विकयंतस्स नि म्मलउं ॥ निग्गुण बुद्धिपयास ॥ ५ ॥ जलण अणे विणु जलणहिपास । नरविकयज्जल जावही पास तिन्नि पयाहिणि दिन्नियपास । जिम जिय वुट्टे भव डुह पास ॥ ६ ॥ जल निम्मल कर कमलेहि लेविणु। सुरवइ जावहि मुणिवई सेवणुं। पनणई जिणवर तुह पइ सरणं भय तुट्टइ लम्नई सि द्धि गमणं ॥ ७ ॥ ए कही लूण उतारी जल सरण कीजै ॥ इति लूण उतारण पूजा ॥

॥ अथ पुष्पमाला पहिरावण पूजा ॥

उन्नय पयय भत्तस्स नियगाणे संठियं कुणं तस्स जिण पासे जमिय जणस्स । पिछतुह हुयवह पभ्रणं ॥ १ ॥ सव्वो जिणप्पभावो सरिसा सरिसेसु जेण रचन्ती सव्वन्नूण अपासे जरुस्स भमणं नसं कमणं ॥ २ ॥ अच्चंत दुःकरं पिहू हुयवह निवरुण जरैण कयं आणा सव्वनूणं । न कया सुकयस्स मूलमिणं ॥ ३ ॥ यह कहकर माला चढावे ॥

॥ अथ वुट्टा पुष्पपूजा ॥

उवणेव मंगलेवो जिणाण मुहलालि संवलिया तित्थ पवत्तण समई। तियसे विमुक्का कुसुम वुठी ॥ १ ॥ ए कही पुष्प प्रभुआगे उछालीजे ॥

॥ नोरकी आरती ॥

जयजय आरति शान्ति तुमारी । तोरा चरण कमलकी में जाऊं वलिहारी ॥ विश्वसेन अचिराजी केनन्दा, शान्तिनाथमुख पूनमचन्दा ॥ जय० ॥ १ ॥ चालिस धनुष सौवन मयकाया ॥ मृगलांछन प्रभु चरण सुहाया ॥ जय० ॥ २ ॥ चक्रवर्ति प्रभु पांचमां सोहे सोलमां जिणवर जग सहु मोहे ॥ जय० ॥ ३ ॥ मंगल आरती भोरहिं कीजै, जनम जनम को लावो लीजे ॥ जय० ॥ ४ ॥ करजोड़ी सेवक गुण गावे, सोनरनारी अमर पद पावे ॥ जय० ॥५॥ इति आरती सम्पूर्णा ॥

श्रीमद्यशोविजयजी उपाध्याय कृत वडी नवपद पूजा

॥ दोहा ॥

परम मंत्र प्रणमी करी । तासधरी उरध्यान ॥
अरिहंत पद पूजाकरो । निज २ सक्ति प्रमाण॥१॥

॥ काव्य, उपजातिवृत्तम् ॥

उप्पन्नसन्नाणं महोमयाणं,सप्पाडिहेरासण संठियाणं ॥ सद्देसणाणंदिय सज्जणाणं, नमो नमो होउ सया जिणाणं ॥ १ ॥

भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥ नमोनंत संतप्रमोद प्रधानं प्रधानाय भव्यात्मने भास्वताय ॥ यथा जेहना ध्यानथी

सौख्यभाजा, सदासिद्ध चक्राय श्रीपालराजा ॥ २ ॥ कन्या कर्म दुमममर्मचकचूर, जेणें भला भव्य ! नवपद ध्यानेन तेणें ॥ करि पूजना भव्य भावे त्रिकालें, सदा वासियों आतमा तेण कालें ॥ ३ ॥ जिके तीर्थंकर कर्म उदये करीने, दिये देश ना भव्यने हित धरीने ॥ सदा आठ महापाडि हेर समेता, सुरेशें नरेशें स्तव्या ब्रह्मपूता ॥ ४ ॥ कन्या घातिया कर्म चारे अलग्गा, भवोपग्रही चार जे छे विलग्गा ॥ जगत् पंच कल्याणके सौख्य पामे, नमो तेह तीर्थंकरा मोक्षगामे ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ देशी उल्लालानि

तीर्थपति अरिहा नमूं धर्म्म धुरंधर धीरोजी ॥ देशना अमृत वरसतां, निजविरज वरु वीरोजी।१। उल्लालो ॥ वरअखय निर्मल ज्ञानभासन, सर्वभाव प्रकाशता। निजशुद्ध श्रद्धा आत्मभावे, चरण थिर ता वासता ॥ जिन नाम कर्म प्रभाव अतिशय प्रातिहारज शोभता, जगजंतु करुणावन्त भगवन्त भविक जनने थोभता ॥ २ ॥

प्रथमपूजा ॥

॥ ढाल ॥

॥ श्री पालना रासनी देशी ॥

वीशेभव वरस्थानक तप करी जेणे बाध्युंजिन

नाम । चौसठ इन्द्रपूजित जे जिन, कीजे तास प्रणामरे । भविका सिद्धचक्र पदवंदो, जिम चिर कालेनंदोरे ॥ भवि० । उपशम रसनो कंदोरे । भ० रत्नत्रय नो वृन्दोरे ॥ भ० ॥ सवै सुरनर इन्दोरे । भ० । सि० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जेहनेहोय कल्या णक दिवसे नरकें पिण उजवालुं ॥ सकल अधिक गुण अतिशयधारी, ते जिन नमि अघ टालुंरे ।भ० सिं० ॥ २ ॥ जे तिहुनाण समग्ग उपन्ना भोग करम क्षीण जाणी ॥ लेइ दिक्षा शिक्षा दिये जनने, ते नमिये जिननाणीरे । भ० । सि० ॥ ३ ॥ महागोप महा माहण कहिये निर्यामक सत्थवाह । उपमा एहवी जेहने छाजे, ते जिन नमियें उत्साहरे । भ० । सि० ॥ ४ ॥ आठ महा प्रातिहारज जसु छाजे, पांत्रीस गुणयुत वाणी । जे प्रतिबोध करै जगजनने ते जिन नमियें प्राणीरे । भ० ॥ सि० । ५ ।

॥ ढाल ॥

अरिहन्त पद ध्यातो थको दव्वहगुण पज्जायरे । भेदच्छेद करी आतमा अरिहंत रूप थायेरे ॥ १ ॥ वीरजिनेश्वर उपदिशे, सांभलजो चित्त लाईरे ।आ-तमध्याने आतमा ऋद्धिमिलै सवी आईरे ॥ २ ॥ वी० ॥ ओं ह्रीं परमा० अनं० ज्ञानशक्त० जन्म० मृत्युनिवा० श्रीमत्सिद्धचक्राय पंचामृतं— चंदनं पुष्पं—धुपं—दीपं—अक्षतं—नैवेद्यं—फलं—वस्त्रं-वासंयजा

मदे स्वाहा ॥ इति अरिहन्त पदपूजा सम्पूर्ण ॥

॥ द्वितीय सिद्धपद पूजा प्रारंभः ॥

दोहा– दूजी पूजा सिद्धकी, कीजे दिल खुशी याल । अशुभ कर्म दूरे टले, फले मनोरथ माल। १।

॥ काव्यं–इन्द्र वज्रावृत्तम् ॥

सिद्धाण माणंद रमालयाणं, नमो नमोऽणं त चउ कयाणं ॥ समग्ग कम्म क्खयकारगाणं, जम्मं जरा दुक्ख निवारगाणम् ॥

॥ भुजंग प्रयातवृत्तम् ॥

करी आठ कर्म क्षये पार पाम्या, जरा जन्म मर णादि भय जेणें वाम्या ॥ निरावरण जे आत्मरूपे प्रसिद्धा, यथा पार पामी सदा सिद्ध बुद्धा ॥ १ ॥ त्रिभागोनदेहावगाहात्मदेशा, रह्या ज्ञानमयजा तिवर्णादिलेशा, सदानंद सौख्याश्रिता ज्योति रूपा, अनावाध अपुनर्भवादि स्वरूपा ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उल्लालानी देशी ॥

सकल करममल क्षयकरी, पूरण शुद्ध स्वरूपो जी ॥ अव्यावाध प्रभुतामयी, आतम संपत्ति भूपोजी ॥ २ ॥ उल्लालो ॥ जेह भूप आतम सह ज संपत्ति, शक्ति व्यक्तिपणे करी ॥ स्वद्रव्यक्षेत्र स्वकालभावे, गुण अनंता आदरी ॥ स्वभाव गुण पर्याय परणित सिद्धि साधन पर भणी ॥ मुनिराज

मानसर हँस समवरू, नमो सिद्ध महा गुणी ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥

श्रीपालना राशनी देशी ॥ समयपयेसंतर अण फरसी, चरमतिनाग विशेष ॥ अवगाहन लही जे शिव पहोंता, सिद्ध नमो ते अशेष रे ॥ न० ॥ सि० ॥ ६ ॥ पूर्व प्रयोगने गति परिणामें, बंधन छेद असंग ॥ समय एक ऊर्धगति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमों रंगरे ॥ न० ॥ सि० ॥ ७ ॥ निर्मल सिद्ध शिलानी ऊपर, जोयण एक लोकंत ॥ सादि अनंत तिहां स्थिति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमो संतरे ॥ न० ॥ सि० ॥ ८ ॥ जाणे पण न सके कही पुरगुण, प्रकृति तिम गुण जास ॥ उपमाविण नाणी नवमाहे, ते सिद्ध दीयो उल्लास रे ॥ न० ॥ सि० ॥ ए ॥ ज्योतिशु ज्योति मिली जस अनुपम, विरमी सकल उपाधि ॥ आतमराम रमापति समरो, ते सिद्ध सहज समाधिरे ॥ न० ॥ सि० ॥ १० ॥

॥ ढाल ॥

रूपातीत स्वनाव जे, केवल दंसणनाणी रे ॥ ते ध्याता निज आतमा, होये सिद्धगुण खाणी रे ॥ वी० ॥ ३ ॥ ॐ० ह्रीं० इति सिद्ध पद पूजा ॥

॥ तृतीय आचार्य्यपद पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

हिव आचारज पदतणी पूजा करो विशेष ॥ मोह तिमिर दूरे हरे, सूजे जाव अशेष ॥ १ ॥

॥ काव्य, इंद्रवज्रा वृत्तम् ॥ सुरीणडुरी कय कुग्ग हाणं, नमो नमो सूरसमप्पहाणं । सद्देसणादाण समायराणं । अखंड छत्तीस गुणायराणं ॥

जुजंगप्रयातवृत्तम् ॥ नमुं सूरिराजा सदातत्त्वताजा, जिनेंद्रागमें प्रौढ साम्राज्यजाजा ॥ षट्वर्ग वर्गित गुणें शोजमाना, पंचाचारने पालवे सावधाना ॥१॥ जविप्राणीने देशना देशकाले, सदा अप्रमत्ता पथासूत्र आले ॥ जिके शासनाधार दिग्दंतिकल्पा, जगत्ते चिरंजीव जोशुरूजल्पा ॥ २ ॥

॥ ढाल उल्लालानी देशी ॥

आचारिज मुनिपति गुणी, गुणछत्तीशे धामो जी । चिदानंद रस स्वादता, परजावे निक्कामो जी ॥ १ ॥ उल्लालो ॥ निक्काम निर्मल शुद्ध चिदघन, साध्य निज निरधारथी । वरज्ञान दर्शन चरण वीरज, साधनाव्यापारथी ॥ जविजीव बोधक तत्त्व शोधक, सयलगुण संपति धरा । संवर समाधी गत उपाधी, डुविध तप गुण आदरा ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

श्रीपालना राशनी देशी ॥ पांच आचार जे सूधा

पाले, मारग भाषे सांचो । ते आचारज नमिये नेह सुं, प्रेम करीने जांचो रे ॥ भवि० ॥ सि० ॥ ११ ॥ वर छत्रीश गुणें करी सोहे, युग प्रधान जग मोहे । जग मोहे न रहे खिण कोहे, सूरि नमुं ते जोहे रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ १२ ॥ नित अप्रमत्त धर्म उवएसे, नहिं विकथा न कषाय । जेहनें ते अचारिज नमिये अकलुष अमल अमाय रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ १३ ॥ जे दिये सारण वारण चोयण, पडिचोयण वली जनने । पटधारी गछ थंभ आचारिज, ते मान्या मुनि मनने रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ १४ ॥ अत्थमिएं जिन सूरज केवल वंदीजे जगदीवो । भुवन पदारथ प्रगट न पटु ते, आचारज चिरजीवोरे ॥ भ० ॥ सि० ॥ १५ ॥

॥ ढाल ॥

ध्याता आचारिज भला, महामंत्रशुभ ध्यानी रे ॥ पंच प्रस्थाने आतमा, आचारज होय प्राणी रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं० इति आचार्यपद पूजा ॥

॥ चतुर्थ उपाध्याय पद पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

गुण अनेक जग जेहना । सुन्दर शोभित गात्र ॥ उवझाया पद अरचिये । अनुभव रसनो पात्र ॥ १ ॥

काव्यं, इंद्रवज्रावृत्तम् । सुतत्थ वित्थारण तप्पराणं

नमो नमो वायगकुंजराणं । गणस्स संधारण साय राणं, सव्वप्पणा वज्जिय मच्छराणं ॥

भुजंगप्रयातवृत्तम् । नहीं सूरि पिण सूरि गुण ने सुहाया, नमुं वाचका त्यक्तमदमोह माया । वलि द्वादशांगादि सूत्रार्थदाने, जिके सावधाने निरुद्धा भिमाने ॥ १ ॥ घरे पंचने वर्गवर्गित गुणौघा, प्रवा दिद्विपोच्छेदने तुल्य सिंघा । गुणी गच्छसंधारणे स्थंभपूता, उपाध्यायते वंदिये चित् प्रभूता ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उल्लालानी देशी ॥

खंतिजुआ मुत्तिजुआ, अज्जव मद्दव जुत्ताजी ॥ सच्चं सोय अकिंचणा, तव संयम गुण रत्ताजी ॥ १॥ ॥ उल्लालो ॥ जे रम्या ब्रह्म सुगुत्तिगुत्ता, सुमति सुमता शुतधरा ॥ स्याद्वादवादइ तत्वसाधक, आत्मपर विभंजनकरा । भवभीरुसाधन धीरशासन, वहन धोरी मुनिवरा ॥ सिद्धांत वायण दान समरथ, नमो पाठकपदधरा ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥

श्रीपालना राशनी देशी ॥ द्वादश अंग सज्झाय करे जे, पारग धारग तास । सूत्र अर्थ विस्तार रसिक ते, नमो उवज्झाय उल्लासरे ॥ भ० ॥ सि० ॥ १६ ॥ अर्थ सूत्रने दान विभागे, आचारज उवज्झाय । भव त्रणये जे लहे शिव संपद, नमिये ते सुपसायरे ॥ भ०

॥ सि० ॥ १७ ॥ मूरख शिष्य निपजाये जे प्रनु, पाहण पल्लव श्राणे । ते उवझाय सकल जन पूजित, सूत्र अरथ सवि जाणे रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ॥ १७ ॥ राज कुँवर सरिखा गणचिंतक, आचारिज पद योग । जे उवझाय सदा ते नमतां, नावे नव नय सोगरे ॥ ज० ॥ सि० ॥ १ए ॥ बावना चंदन रस समवयणे, अहित ताप सवि टाले । ते उवझाय नमीजे जे वली, जिन शासन अजुवालेरे ॥ ज० ॥ ॥ सि० ॥ २० ॥

॥ ढाल ॥

तपसिझाये रत सदा, द्वादश अंगनो ध्याता रे । उपाध्याय ते आतमा, जगबंधव जगभ्राता रे ॥ वी० ॥ तु० ॥ ५ ॥ॐ० ह्रीं इति उपाध्यायपद पूजा ॥

॥ पंचम साधूपद पूजा प्रारंनः ॥

॥ दोहा ॥

मोक्ष मार्ग साधन नणी । सावधान यथा जेह । ते मुनीवर पद वंदतां । निर्मल थाहे देह ॥ १ ॥

काव्यं, इंद्रवज्रावृत्तम् ॥ साहूण संसाहिअ संजमाणं, नमो नमो सुरू दयादमाणं । तिगुत्ति गुत्ताण समाहियाणं, मुणीण माणंद पयट्ठियाणं ॥

नुजंगप्रयात वृत्तम् । करे सेवना सूरिवायग गणीनी, कहुं वर्णना तेहनीशी मुणिनी । समेता सदा

पंचसुमति त्रिगुप्ता, त्रिगुप्ते नहीं काम भोगेषु लिप्ता ॥ १ ॥ वली बाह्य अभ्यंतरे ग्रंथ टाली, होय मुक्तिने योग्य चारित्र पाली । शुभष्टांग योगे रमे चित्त वाली, नमुं साधुने तेह निज पाप टाली ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उल्लालानि॥

सकल विषय विषवारीने, निःकामी निस्संगीजी । भवदवताप समावता, आतमसाधन रंगीजी॥ १॥ उल्लालो ॥ जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणे, देह निर्मम निर्मदा । काउसग्ग मुद्राधार आसन, ध्यान अभ्यासी सदा । तप तेज दीपे कर्म झीपे नैवछीपे परभणी । मुनिराज करुणासिंधु त्रिभुवन, बंधु प्रणमुं हित भणी ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी देशी ॥

जिम तरुफूले भमरो बैसे, पीडा तसुन उपावे । लेइ रस आतम संतोषे, तिम मुनि गोचरी जावे रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ २१ ॥ पांच इंद्रीने जे नित जीपे, षटकाया प्रतिपाल । संयम सत्तर प्रकार आराधे वंदू दीन दयालरे ॥ भ० ॥ सि० ॥ २२ ॥ अढार सहस शीलंगना धोरी, अचल आचार चरित्र । मुनि महंत जयणायुत वंदी, कीजे जनम पवित्ररे ॥ भ० ॥ सि० ॥ २३ ॥ नवविध ब्रह्मगुप्ति जे पाले, बारहविह तप सूरा ॥ एहवा मुनि नमिये जो प्रग

टे, पूरवपुण्य अंकूरारे ॥ भं० ॥ सि० ॥२४॥ सोना तणी परे परीक्षा दीसे, दिन दिन चढते वाने ॥ संजमखप करता मुनि नमिये, देशकाल अनुमाने रे । भ० ॥ सि० ॥ २५ ॥

॥ ढाल ॥

अप्रमत्तजे नित रहे, नवि हरषे नवि सोचैरे ॥ साधु सुधाते आतमा, शुं मूंडे शुं लोचैरे । वी० ।६। इतिसाधूपद पूजा समाप्ताः ।

षष्ठी सम्यक्त्व दर्शन पद पूजा प्रारंभः।

॥ दोहा ॥

जिनवर भाषित सुधनय, तत्त्व तणी परतीत । तेसम्यग् दरशन सदा, आदरीये सुभरीत ॥ १ ॥

॥ काव्यं ॥ इन्द्रवज्रावृत्तं ॥ जिणुत्त तत्ते रुइ लक्ख णस्स, नमो नमो निम्मल दंसणस्स । मिछत्त नासाइ समुग्गमस्स मूलस्स सद्धम्म महादुमस्स भुजंगप्रयातवृत्तम् । विपर्या सहो वासना रूपमिथ्या, टलै जे अनादि अछैजे कुपथ्या । जिनोक्ते हुइ सहजथी शुधध्यानं, कहिये दर्शनं तेह परमं निधानं ।१। विना जेहथी ज्ञान मज्ञान रूपं, चरित्रं विचित्रं भवारण्य कूपं ॥ प्रकृति सातने उपसमे क्षय तेह होवै, तिहां आप रूपे सदा आप जोवै ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उल्लालानी देसी ॥

सम्यग्ग् दर्शन गुण नमो, तत्त्वप्रतीत स्वरूपीजी। जसु निरधार स्वजाव छे,चेतन गुणजे अरूपीजी ॥ १ ॥ उल्लालो ॥ जे अनूप श्रद्धा धर्म प्रगटे, सयल पर ईहा टले । निज शुद्ध श्रद्धा भाव प्रगटे अनुनव, करुणा ऊछले । वहुमान परिणिति वस्तुतत्वे, अहव सुर कारण पणे। निज साध्यदृष्टे सर्व करणी, तत्वता संपति गिणे ॥ २ ॥

॥ पूजा ढाल ॥

श्रीपालना राशनी देशी ॥ शुद्ध देव गुरुधर्म परीक्षा. सद्दहणा परिणाम । जेह पामीजे तेह नमीजे. सम्यक्दर्शन नाम रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ २६ ॥ मल उपशम क्षय उपशम जेहथी, जे होय त्रिविध अजंग । सम्यक् दर्शन तेह नमीजे, जिनधर्मे दृढरंग रे ॥ ज० ॥ सि० ॥ २७ ॥ पांच वार उपशम लहीजै, क्षय उपशमिय असंख ।। एकवार क्षायकते समकित, दर्शन नमियें असंख रे॥ ज० ॥ सि० ॥ ॥ २८ ॥ जेविण नाण प्रमाण न होवै, चारित्रतरु नवि फलियो । सुखनिर्वाणन जे विण लहिये, समकित दर्शन वलियो रे ॥ ज०॥ सि० ॥ २९ ॥ सडसठ बोले जे अलंकरी ज्ञान चारित्रनुंमूल । समकित दर्शन ते नितप्रणमूं,शिवपंथनुं अनुकूलरे । ज०।सि० ३०

॥ ढाल ॥

समसंवेगादिक गुणा, क्षय उपशम जे आवे रे। दर्शन तेहिज आतमा, शुं होय नाम धरावे रे ॥ ॥ वीर० ॥ ७ ॥ इति सम्यक् दर्शनपदपूजा॥

सप्तम सम्यक् ज्ञान पद पूजा

॥ दोहा ॥

सप्तमपद श्रीज्ञाननो । सिद्ध चक्र तप मांहि । आराधीजे शुभमने। दिन दिन अधिक उछाह ॥१॥

॥काव्यं॥इन्द्रवज्रावृत्तम्। अन्नाणसंमोह तमोहरस्स । नमो नमो नाण दिवायरस्स । पंचप्पयारस्सुवगारगस्स । सत्ताण सव्वत्थ पयासगस्स ॥

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम्। होय जेहथी ज्ञान शुद्ध प्रबोधे, यथा वर्ण नासे विचित्रा विबोधे। तेणें जाणिये वस्तु षटद्रव्यभावा, न होवे वितथ्था (वाद) निजेच्छास्वभावा ॥ १ ॥ होय पंचमत्यादि सुज्ञान भेदे, गुरूपासती योग्यता ते न वेदे। वली ज्ञय हेया उपादेय रूपे, लहे चित्तमां जेम ध्याने प्रदिपे ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उल्लालानी ॥ देशी ॥

भव्य नमो गुण ज्ञानने, स्वपर प्रकाशक भावेजी। परयाय धर्म अनंतता भेदाभेद स्वभावेजी ॥ भ० ॥ १ ॥ उल्लालो । जेमोख्य परणति सकल ज्ञायक,

बोध वास विलासता । मति आदि पंच प्रकार निर्मल, सिद्ध साधन लंछता । स्याद्वाद संगी तत्त्व रंगी, प्रथम भेद अभेदता । सविकल्पने अविकल्प वस्तु, सकल संशय छेदता ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥

श्रीपालना रासनी देशी । भक्ष अभक्ष न जे विण लहिये, पेय अपेय विचार । कृत्य अकृत्य न जे विण लहिये, ज्ञान ते सकल आधाररे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ३१ ॥ प्रथम ज्ञान नें पीछे अहिंसा, श्री सिद्धांते भाख्युं । ज्ञानने वंदो ज्ञान मनिंदो, ज्ञानीये शिव सुख चाख्युंरे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ३२ ॥ सकल क्रिया नुं मूल जे श्रद्धा, तेहनुं मूल जे कहिये । तेह ज्ञान नित नित वंदीजे ते विण कहो किम रहिये रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ३३ ॥ पांच ज्ञान मांहि जेह सदागम, स्वपर प्रकाशक तेह । दीपक परें त्रिभुवन उपकारी, वली जिम रवि शशि मेहरे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ३४ ॥ लोक ऊरध अध तिर्यग् ज्योतिष, वैमानिकनें सिद्धि । लोक अलोक प्रगट सवीजेह थी, ते ज्ञान मुझ शुद्धि रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ३५ ॥

॥ ढाल ॥

ज्ञानावर्णी जे कर्म छे, क्षय उपशम तसु थाये रे । तो होय एहिज आतमा, ज्ञान अबोधतां जाय

रे । वी० ॥ ७ ॥ ॐह्रीं इति सम्यक् ज्ञान पद पूजा ।

॥ अष्टम चारित्र पद पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

अष्टम पद चारित्रनो । पूजो धरी उमेद ।
पूजत अनुभव रसमिले, पातिक होय उछेद ॥ १ ॥

॥ काव्यं ॥ इंद्रवज्रावृत्तम् ॥ आराहिया खंमीअस कीअस्स, नमो नमो संजम वीरियस्स ॥ सज्झावणा संग विवड्ढियस्स निव्वाण दाणाइ समुज्झयस्स ॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥ वली ज्ञानफल ते धरिये सुरंगे, निरासंसताद्वाररोधप्रसंगे । भवांवोध संतारणे यान तुल्यं । धरूं तेह चारित्र अप्राप्त मूल्यं ॥ १ ॥ होय जास महिमा थकी रंक राजा, वली द्वादशांगी भणी होय ताजा । वली पापरूपोपि निःपाप थाये, थइ सिद्ध ते कर्मने पार जाये ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उल्लालानी देशी ॥

चारित्रगुण वली वली नमो, तत्त्वरमण जसमूलो जी । पर रमणीय पणुं टले, सकल सिद्ध अनुकूलो जी ॥ चा० ॥ १ ॥ उल्लालो । प्रतिकूल आश्रव त्याग संयम, तत्त्वथिरता दमसमइ । शुचि परमखंती मुनि दशमेपद, पंचसंवर उपचइ । सामायिकादिक भेद धर्में, यथा ख्याते पूर्णता । अकषाय अकलुष अमल उज्जल, काम करमल चूर्णता ॥ २ ॥

॥ ढाल श्रीपालनारासनी देशी ॥

देशविरतिनें सर्व विरतिजे । ग्रहीयतिनें अभि राम । ते चारित्र जगत जयवंतो । कीजै तास प्रणा म रे । ज० ॥ सि० ॥ १ ॥ तृणपरें जेपट्‌खंड सुख छंडी । चक्रवर्ति पिण वरियो । ते चारित्र अखय सुख कारण । ते में मन मांहि धरियोरे॥ज०॥सि०॥ ॥ २ ॥ हुआ रंकपणें जे आदरि । पूजित इंद्र नरिंद । अशरण सरण चरण ते वंदू । वरिउं ज्ञान आनंदरे ॥ ज० ॥ सि० ॥३॥ वारमास परजाइं जेहनें । अनुत्तर सुख अतिक्रमिइं । शुक्ल सुक्ल अभिजा त्यते ऊपरि । ते चारित्रनें नमीइं रे ॥ज०॥सि०॥४॥ चयते आठ करमनो संचय । रिक्त करें जे तेह । चारित्र नाम निरुक्ते भाख्युं । तेवंदुं गुण गेहरे ॥ ज० ॥ सि० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

जाणि चारित्र ते आतमा । निज स्वभाव मांहि रमतो रे । लेश्या शुद्ध अलंकरयो । मोहवनें नवि भमतो रे ॥ वी० तुमे० ॥ ६ ॥ ॐह्रीं प० ॥ इति आठमी श्रीचारित्रपद पूजा ॥

॥ नवमी तप पद पूजा प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

करमकाष्ठ प्रतिजालवा । परतिख अगनि समान ।

ते तप पद पूजो सदा । निरमल धरिय ध्यान ॥ १॥
काव्यं ॥ इन्द्रवज्रावृत्तम् । कम्मद्दुमोन्मूलन कुंजरस्स ।
नमोऽत्थु तिव्व तवोयरस्स । अणेग लद्धीण निबंधणस्स।
डुस्सज्झ अत्थाणय साहणस्स ॥ ७ ॥ इय नवपय
सिद्धिं लद्धि विज्जा समिद्धं । पयम्मिय सरवग्गं
ह्रींतिरेहा समग्गं । दिसिवय सुरसारं खोणि पीढा
वयारं । तिजय विजयचक्कं सिद्ध चक्कं नमामि ॥१॥
त्रिकालक पणें कर्म्मकषाय टाले । निकाचित पणें
बांधिया तेहवाले । कह्यो तेह तप बाह्य अभ्यंतर
डुभेदे । क्षमा युक्ति निर्हेत डुर्ध्यान छेदे ॥ ए ॥
होय जास महिमाथकी लब्ध सिद्धि, अवांछकपणे
कर्म आवरण शुद्धि ॥ तपो तेह तप जे महानंदहे
ते होइ सिद्धि । सीमंतनी निज संकेत इम नव
पद ध्यावे । परम आनंद पावे, नव भव शिव जावे,
देव नरभवज पावे ॥ ज्ञान विमल गुण गावे सिद्धचक्र
प्रभावे, सब दुरति समावे, विश्व जयकारपावे ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ उल्लालानि देशी ॥

इच्छारोधन तप नमो, बाह्य अभ्यंतर भेदे जी ॥
आतम सत्ता एकता, पर परणित उच्छेदे जी ॥ १ ॥
उल्लालो ॥ उच्छेद कर्म अनादी संतति जे सिद्धपणो
वरे ॥ शुभयोगसंग आहार टाली भाव अक्रियता
करे ॥ अंतर मुहूरत तत्त्व साधे, सर्व संवरता करी ॥
निज आत्मसत्ता प्रगट भावें, करो तप गुण आदरी ॥२॥

॥ ढाल ॥

इम नवपद गुणमंडलं, चउनिक्षेप प्रमाणे जी ॥ सात नयें जे आदरे सम्यक्ज्ञानें जाणे जी ॥ उल्ला लो ॥ निर्धार सेती गुणे गुणणो, करइ जे बहुमान ए ॥ जसु करण ईहा तत्त्व रमणें, थाये निर्मल ध्यान ए ॥ इम शुद्धसत्ता भलो चेतन, सकल सिद्धि अनुसरे ॥ अक्षय अनंत महंत चिदघन, परम आनंद तावरे ॥ कलश ॥ इम सयल सुखकर गुणपुरंदर, सिद्धचक्र पदावली ॥ सवि लब्धि विद्या सिद्धिमंदिर, भविक पूजो मन रली ॥ उवझाय वर श्रीराजसागर, ज्ञान धर्म सुराजता ॥ गुरु दीपचंद सुचरण सेवक, देवचंद सुशोभता ॥ १ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥

श्रीपालना रासनी देशी ॥ जाणंता त्रिहूं ज्ञानें संयुत, ते भवमुगति जिणंद ॥ जेह आदरे कर्म खपेवा, ते तप सुरतरु कंदरे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ४१ ॥ कर्म निकाचित पणि क्षय जाई, क्षमा सहित जे करतां ॥ ते तप नमियें तेह दीपावे, जिन शासन उजमंतारे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ४२ ॥ आमोसही पमुहा बहु लद्धि, होवे जास प्रभावे ॥ अष्टमहासिद्धि नव निधि प्रगटे, नमियें ते तप भावे रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ४३ ॥ फल शिवसुख महोटुं सुर नरवर,

संपति जेहनुं फूल ॥ ते तप सुरतरु सरीषो वंदूं, श ममकरंद अमूल रे ॥ज०॥सि० ॥ ४४ सर्व मंगल मां हिपहिलो मंगल, वरणवियो जे ग्रंथ॥ ते तप पद त्रि करण नित नमीये वर सहाय सिवपंथ रे ॥ ज० सि० ॥ ४५ ॥ इम नव पद थुणतो तिहां लीनो, हुउ तन्मय श्रीपाल ॥ सुजस विलास छे चोथे खंडे, एह इग्यारमी ढाल रे ॥ ज० ॥ सि० ४६ ॥

॥ ढाल ॥

इछारोधन संवरी, परणित समता योगे रे ॥ तप ते एहिज आतमा वरते निजगुण भोगे रे ॥ वी० ॥ ॥ १० आगम नो आगम तणो, भाव ते जाणो सां चो रे ॥ आतम भावें थिर हुवो, पर भावे मत राचो रे ॥ वी० ॥ ११ ॥ अष्ट सकल समृद्धिनी घटमांहि ऋद्धिदाखी रे ॥ तिम नवपद ऋद्धि जाण जो, आ तमराम छे साखी रे ॥वि० ॥१२॥ योग असंख्य छे जिन कह्या, नवपद मुख्यते जाणो रे ॥ एह तणे अविलं बने, आतमध्यान प्रमाणो रे ॥ वी० ॥ १३ ॥ ढाल बारमी एहवी, चोथे खंडे पूरी रे ॥ वाणी वाचक जस तणी, कोइनय रही अधूरी रे ॥ वी० ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० अनं० ज्ञान० जन्मजरा० श्री मत्सिद्धचक्राय वासं—पंचामृतं—चंदनं—पुष्पं—धूपं— दीपं--अक्षतं—नैवेद्यं—फलं—वस्त्रं यजामहे- ॥ इति तप पद पूजा ॥

इति श्री देवचंदजी यशविजयजी महोपाध्याय
कृत सिद्धचक्र महात्म नवपदजीकी श्री पूजा सं०।
अथ नवपद पूजादिक सर्व पूजाओं में जो सामग्री
अवश्य चाहिये सो सबके याददास्ती खातर केई
चीजों कें नाम लिखते है.(पंचामृत) दूध दही
घृत मिश्री शुद्धजल केसर सुगंध चंदन कपूर कस्तू
री अंबर रोली मोली छूटाफूल फूलोंकी माला
फूलोंका चंद्रवा धूप चावल प्रमुख नव जातके धान
नव प्रकार के नैवैद्य नव प्रकार के फल (९) प्रका
रके पक्कवस्तु मिश्री पतासा डेला वदाम सुपारी
प्रमुख अंगलुहणा खातर सपेद वस्त्र पहरावणी
खातर उत्तम रेशमी प्रमुख वस्त्र वासक्षेप गुलाव
जल अत्तर इत्यादिक और नव नालीके कलस
(९) रकेबी परात सतला आरती मंगलदीप भग
वान के अंगी समोसरण इत्यादिक सबचीज पह
ली ठीक कर के रक्खे इससे पूजा में विघ्न न होय
इहां संक्षेप विधि कही विसेप विधि गुरुके मुखसे
जाण लेणी ॥ इति ॥

अथ दादा गुरु महाराज की पूजा

अथ पहली थापना स्थापन करके आवाहन का
श्लोक पढ़े ॥ काव्य ॥ सकल गुण गरिष्टान् सत्तपो
निर्वरिष्टान् शम दम यमपुष्टांश्चारुचारित्रनिष्टान्।
निखिल जगति पीठे दर्शितात्मप्रज्ञावान् मुनिपकु

शल सूरिन्स्नापयाम्यत्र पीठे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिनदत्त श्री जिन कुशल श्री जिन चंद्रसूरिगुरौ अत्रावतरावतर स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिन दत्त सूरिगुरौ अत्रतिष्ट २ ठः ठः ठः स्वाहा इति प्रतिष्ठापनं ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनदत्तसूरिगुरौअत्र ममसंनिहितोभव वषट् इति संनिधीकरणं ॥ अथ जलका कलश लेके स्नात्रीया सुच होके खडा रहे ॥ प्रथम जल पूजा ॥ दोहा ॥ ईश्वर जग चिंतामणी कर परमेष्टिध्यान । गणधर पद गुण वर्णना पूजन करो सुजाण ॥ सौ धर्मा मुनिपति प्रगटवीरजिने श्वर पाट । मिथ्या मत तम हरणकूं भव्य दिखावण वाट ॥२॥ सुस्थितसुप्रतिवद्ध गुरुसूरि मंत्रको जाप । कोटिकीयो जवध्यानधर कोटिकगछ सुथाप ॥ ३॥ दश पूर्वी श्रुत केवली भये वज्रधरस्वाम । तादिन तें गुरु गछ कों वज्रशाख भयो नाम ॥ ४ ॥ चंद्र सूरि भये चंद्रसम अतहि बुद्धि निधान । चंद्रकुली सव जगत में पसर्यो वहु विज्ञान ॥ ५ ॥ वर्द्धमान के पाट पद सूरिजिनेश्वर भाश, चैत्य वासि कूं जीत कर सुविहित पक्ष प्रकाश ॥ ६ ॥ अणहि लपुर पाटणसभा लोक मिले तिहां लक्ष । खरतर विरुद सुधानिधि दुर्लभ राजसमक्ष ॥ ७ ॥ अभय देव सूरि भये नव अंगटीका कार । थंभण पारस प्रगट कर कुष्ट मिटा वनहार ॥ ८ ॥ श्री जिनवल्लभ

सूरिगुरु रचनाशास्त्र अनेक । प्रतिबोधे श्रावकबहुत ताके पट्ट विशेष ॥ ९ ॥ हुंवरू श्रावग वाघरी अठारे हज्जार । जैन दया धर्मी किये वरते जेंजैकार ॥१०॥ दादा नाम विख्यात जस सुर नर सेवग जास। दत्त सूरि गुरु पूजतां आनंद हर्ष उल्लास ॥ ११ ॥ दिल्ली में पतसाहने हुकम उठाया शीश । मणिधारी जिन चंद गुरु पूजो विसवावीस ॥ १२ ॥ ताके पट्ट परंपरा श्री जिन कुशल सूरिंद । अकबर कूं परचा दीआ दादा श्री जिन चंद ॥ १३ ॥ ऐसे दादा चार्यकूं पूजो चित्त लगाय। जल चंदन कुसुमादि कर ध्वज सौगंध चढाय ॥ १४ ॥ चाल ॥ दादा चिरंजीवो एदेशी ॥ गुरुराज तणी पूजन कर जविसुखकर मिलसी लछी घणी । ए आँकणी।गुरुदत्त सुरिंद जग सुखकारी, गुरु सेवगने सानिधकारी, गुरुचरण कमलनी बलिहारी, ॥ गु० ॥ १ ॥ संवत इग्यारे वार शशि, वत्तीसे जनम्यां शुभदिवसी, श्रावग कुल हुंवरूने हुलसी ॥ गु० ॥ २ ॥ जसुवाछगसा पितुनाम भणे, वाहरूदे माता हर्ष घणे, इकतालीसे दीक्षा पभणे ॥ गु० ॥ ३ ॥ गुणं हत्तरे वल्लभ पाट धरी, गुरु माय बीजनो जाप करी, गुरु जगमे प्रगट्या तरणतरी ॥ गु० ॥ ४ ॥ मणि धारी जिन चंद उपगारी, जिनदत्त सूरिंदके पटधारी, जये दादा दूजासुख कारी ॥ गु० ॥ ५ ॥ राशल पितु देल्हण

दे माता, श्रीमाल गोत्र बोधनशाता, दिल्ली पत शाह सुगुण गाता। गु० ॥ ६ ॥ जसु चोथे पाट उ द्योत करि, जिन कुशल सुरिंद अति हर्ष नरी, तेरे से तीसे जनमघरी ॥ गु० ॥ ७ ॥ जसु जिल्हा जनक जगत्र जीयो, वर जैतसीरी शुनस्वपन लीयो, गुरु बाजेरु गोत्र उद्धार कीयो ॥ गु० ॥ ८ ॥ धनसेता लीसे दीक्षा धरी, जिन चंदसूरीश्वर पाटवरी, गुण हत्तरे सूरि मंत्र जाप करी ॥ गु० ॥ ए ॥ सेवामे बावन वीर खरा, जोगणिया चोसठ हुकम धरा, गुरुजगमें केइ उपगार करा ॥ गु० ॥ १० ॥ माणक सूरीश्वर पद बाजे, जिन चंदसूरि जगमे गाजे, नये दादा चोथा सुखकाजे। गु० ॥ ११ ॥ जिन चांद उगायो उजियालो, अम्मावस की पूनमवालो, सब श्रावकमिल पूजन चालो ॥ गु० ॥ १२ ॥ जिन अकबर कुं परचादीना, काजीकी टोपी वश कीना, बकरीका नेद कह्या तीना ॥ गु० ॥ १३ ॥ गंधोदक सुरभि सुकलश नरी, प्रक्षालन सदगुरु चरण परी, या पूजन कवि ऋद्धिसार करी ॥ गु० ॥ १४ ॥

॥ श्लोक ॥

सुरनदी जल निर्मल धारकौ, प्रबल डुष्कृत दाघनिवारकौं ॥ सकल मंगल वंछित दायकौ, कुशल सूरि गुरो श्चरणौ यजे ॥ १ ॥ ॐ न्हीं श्रीं परम पुरुषाय परम गुरुदेवाय नगवते श्री जिनशासनोद्दी

पकाय श्री जिनदत्तसूरीश्वराय मणिमंडित भा
लस्थल श्रीजिनचंद्रसूरीश्वराय श्रीजिन कुशल
सूरीश्वराय अकब्बर असुर त्राण प्रतिवोधकाय श्री
जिनचन्द्रसूरीश्वराय जलं विर्वपामि स्वाहा ॥ १ ॥

अथ ७जी केशर चंदन पूजा ।

दोहा–॥ केशर चंदन मृगमदा, कर घनसार मि
लाप । परचा जिनदत्त सूरिका, पूज्यां टूटे पाप ॥१
चाल वीन वाजेकी ॥ दीनके दयाल राजसार २ तुं॥
॥ आंकणी ॥ आये जरुअछ नग्र धाम धूम २ धुं वा
जते निशाण ढोरहर्ष रंग हूं-हु०दो०॥१॥ दो०। मुस
लमान मुगलपूत फोजमो जमूं फोत मोत होगया
हायकारसुं ॥ हा०दी० ॥ २ ॥ दोहा ॥ सघन विघन
देख आप हुकम दीन यूं लाओ मेरे पास आस जी
वदान दूं ॥ जी० दी० ॥३॥ दोहा ॥ मृतक पूतमं
त्रसे उठाय दीनतुं देखके अचंभरंग दासखासकुं
॥ दा० दी ०४॥दोहा ॥ करतसेव भाव पूर नूरकराज
जुं ढोरुके अजरू खाण हाजरी भरूं ॥ हा०दी०॥५॥
॥ दोहा ॥ वीज खीजके पर्भी प्रतिकमणके मुं हा थ
से उठाय पात्र ढांक दीन तूं ॥ ढां० दी० ॥६॥ दोहा।
दामनी अमोख वोल सिद्धराज तूं देउवरदान ढोरू
वंधकीन क्यूं ॥ वं० दी० ॥७॥ दोहा ॥ दत्त नाम
जपत जाप करत नांह चूं फेरमें पडूंगी नाह ढोरू

दीनकूं ॥ ठो० दी० ॥ ८ ॥ दोहा ॥ करोगे निहाल आप पाव पलकनूं रामऋद्धिसार दास चरण गंह लूं ॥ च० दी० ॥ ए ॥

॥ श्लोक ॥

मलय चंदन केशर वारिणा, निखिल जाड्य रुजा तपहारिणा। सकल मंगल वांछित दायकं कुशल सूरि गुरोश्चरणौयजे ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीजिनदत्त सूरि श्वराय केशर चंदनं निर्वपामिते स्वाहा ॥ २ ॥दोहा॥ चंपा चेमली मालती मरुवा अरु मचकुंद । जोचा ढेगुरुचरण पर नितघरहोय आनंद ॥ १ ॥ नींद तो गई वादिलामारी । एदेशी ॥ रागमारु ॥ गुरु पर तिख सुर तरु रूप सुगुरु शम दूजो तो नहीं । दूजो तो नहींरे सुमति जन दूजो तो नही गुरु परतिख सुर तरु रूप सुगुरुने पूजो तो सही ॥ ए आंकणी ॥ चितोम नगरी वज्रथंजमें विद्या पोथीरहीरे ॥सु० दि० ॥ हेजी मंत्रजंत्र विद्यासे पूरी गुरु निज हाथ गृही । गुरु० । गुरुपर० ॥ १ ॥ पुर उजेणी महाकाल के मंदिर थंभ कहीरे॥ सुम०। हेजी शिद्धसेन दिन करकी पोथी विद्या सरन लहीरे ॥ सु० ॥ वि० ॥ गुरुप० ॥ २ ॥ उजेणी व्याख्यान वीचमे श्राविका रूप गृहीरे । सु० । श्रा० ॥ हेजी जोगणीयां छलणे कुं आई सबकुं खील दई। सु० । गु० ॥ ३ ॥ दीन होय जोगणीयां चोसठ गुरुकी दाश भईरे। सु० ।गु०।

गु० । हेजी सातदीया वरदान हरख से पसरया सुजस मही । प० । गु० ॥ ४ ॥ पुष्पमाल गुरु गुण की गूंथी चाको चित्त चहीरे ॥ सु० । चा० । हेजी कहे रामऋद्धिसार सुजसकी बूंटी आप दई । बूं० । गू० ॥ ५ ॥ श्लोक ॥ कमल चंपक केतकी पुष्पकै परिमलाहृत् षट्पदवृंदकैः ॥ सकल० ॥ ॐ न्हीं श्रीं श्री जिनदत्त० पुष्पं निर्वपामिते स्वाहा ॥ ३ ॥

दोहा ॥ धूप पूज कर सुगुरुकी, पसरे परमल पूर । जस सुगंध जगमें वधे, चढे सवाया नूर ॥ राग सोरठा ॥ कुबजाने जादूडारा । ए चाल । अंबिका विरुद वखाणे गुरुतेरो । अं० । तुम युग प्रधान नही छाने ॥ गु० । ए आंकणी । गढ गिरिनारपें अंबड श्रावक एसोनियम चितठाणे । युग प्रधान इस जुग में कोई देखूं जन्म प्रमाणे । गु० अं० ॥ १ ॥ कर उपवाश तीन दिन वीते प्रगटी अंबाझाने ॥ गु० । प्रगट होय करमे लिख दीना सुवरन अक्षर दाने । गु० । अं० ॥ २ ॥ या गुण संयुत अक्षर वांचे ताकूं युग वरजाने । गु० । अंबड मुलक २ से फिरतां सूरी शकल पतवाने । गु० अं० ॥ ३ ॥ आया पास तुमारे सदगुरु कर पसार दिखलाने ॥ गु० । वासक्षेप उनऊपर नाला चेला वांच सुणाणे । गु० अं० ।४। सत्रे देवहे दास जिनो के मरुधर कल्प प्रमाणे । गु० । युग प्रधान जिनदत्त सूरीश्वर अंबड शीस

फुरुझाने । गु० । अं० । ५ । उद्योतन सूरिने निज ह
थ चोरासी गछ ठाने । गु० । सोसब तुमरी सेवा
सारे चोरासी गछमाने ॥ गु० । अं० ॥ ६ ॥ जो मि
थ्यात्वी तुमकुं न पूजे सो नही तत्व पिछाने । गु० । भद्र
वाहु स्वामी तुम कीर्त्तन कीनी ग्रंथ प्रमाणे गु० । अं० । ७ ।
युग प्रधान परि कीए गंफिका गण धर पद वृत्ति
स्थाने । कहे रामऋद्धिशार गुरु कूं पूजा धूप कराने
गु० अं० । ८ ॥ श्लोक ॥ अगर चंदन धूप दशांगजैः
प्रसरिताखिल दिक्कु सुधूम्रकैः । शकल मं० । ४ । अं०
ॐ न्हीं श्रीपर० धूपं निर्वपामिते स्वाहाः ४ ।

दोहा । दीप पूज कर सुगण नर नित २ मंगल होत । उ
जियालो जगमें जुगत रहे अखंडत जोत । १ । चाल ख्या
लकी । पूजन कीज्योजी नर नारी गुरु महाराज
का ॥ हो पू० । सिंधु देशमें पंच नदी पर साधे पांचु
पीर । लोइ ऊपर पुरप तिराये एसे गुरु सधीर । पू०
१ ॥ प्रगटहोयके पांच पीरने सात दीया वरदान ।
सिंधु देश मे खरतर श्रावग होवेगा धनवान । पू०
२ । सिंधु देश मुलतान नग्रमे बडा महोछव देख ।
अंबड और गछ का श्रावग गुरु सें कीना द्वेष । पू०
३ ॥ अणहिलपुरपत्तनमे आवो तोमे जाणुं सच्चा ।
बडे महोछव आवेंगे तूं निर्धन होगा कच्चा पू० ४ ॥
पत्तन बीच पधारे दादा सनमुख निर्धन आया ॥
गुरु बतलाया क्यूं रे अंबड अहंकार फल पाया । पू०

॥५॥मनमें कपट कीया अंवमने खरतर महिमा धारी। जहरदीया उन अशनपांनमें गुरु विध जाणी सारी।पू०॥ ६ ॥ नणशाली मुखवर श्रावग से निर्विष मुद्री मंगाई। जहर उतारा तव लोकों में अंवम निंद्या पाई। पू०। ७। मरके विंतर हुवा वो अंवम रजोहरण हर लीना। नणसाली विंतर वचनोंसें गोत्र उतारा कीना।पू०।८ सज्जहोय गुरु औघाले के गोत्र बचाया सारा। ऋद्धिशार महिमा सदगुरु की दीपकका उजयारा।पू० ए। श्लोक। अति सुदि समये खलु दीपकैः विमल कंचन भाजनसंस्थितैः। सकल०ॐ ह्रीं पर० दीपंनिर्वपामिते स्वाहाः ॥५॥ दोहा ॥ अक्षतपूजा गुरुतणी करो महाशय रंग। क्षती न होये अंगमे जीते रणमे जंग।१।राग आसावरी ॥ अवधू सो जोगी गुरु मेरा। ए चाल रतन अमोलख पायो सु गुरु शम रतन अमोलख पायो गुरु शंकट सवही मिटायो।सु० ए आंकणी विक्रमपुर नगरी लोकनकूं हेजा रोग संतायो। व होतउपाय कीया शांतिकका जरा फरक नही आयो सु० र०।१। जोगी जंगम ब्रह्म संन्यासी देवी देव मनायो। फरक नही किनही ने कीना हाहा कार मचायो सु० र०।२। रतन चिंतामणि सरिपो साहिब विक्रमपुर मे आयो। जैनसंघको कष्ट दूरकर जैजैकार वरतायो सु० र० ।३। महिमा सुण

माहेश्वर ब्राह्मण सबही शीश नमायो। जिवत दांन करो महाराजा गुरु तब यूं फुरमायो। सु० र०।४। जो तुम समकित वृतकूं धारो अबही करदूं उपायो। तहत वचन कर रोग मिटायो आनंद हर्ष वधायो। सु० र० ५ । जो कोई श्रावग वृत नही धारयो पुत्री पुत्र चमायो। साधु पांच से दीक्षत कीना साधवी यां समुदायो सु० र०। ६ । मंत्र कला गुरु अतिशय धारी एसो धर्म दिपायो । क्षिमासार पर किरपा कीनी सांचो इलम बतलायो सु० र०। ७। श्लोक। सरल तण्डुलकैरतिनर्मलै प्रवर मौक्तिक पुंजवदुज्वलैः। शकल० ॐ ह्रीं श्रीं प० अक्षतं निर्वपामिते स्वाहाः ।६। दोहा॥ नैवद्य पूजा सातमी करो भविक चित चाव। गुरु गण अगणित कुण गिणे गुरु भव तारण नाव।१। राग कल्याण। तेरी पूजा बणी हे रसमे ए चाल। हो गुरु किया असुर कुं वश मे । ए आंकणी वरुनगरी मे आप पधारे सांभल्या धसमसमे ब्राह्मन लोक बरु अभिमानी मिलकर आया सुसमे हो गु०।१ । महिमा देख सक्या नही गुरुकी भरे मिथ्यात्वी गुसमे। मृतक गउ जिन मंदिर आगे रखदी सनमुख चसमे। हो गु० २। श्रावग देख भये आकुलता कहे गुरु से कसमे। चिंता दूर करी हे संघ की गउ उठ चाली मसमे। हो गुरु० ।३। मरी गउकूं जीति कीनी लोक रह्या सब हसमें। जाके गाय पमी

रुद्रालय संघ जया सव रसमे। हो गु०। ४। ब्राह्मण पांव पड्या सव गुरु के देख तमासा इसमे। हुकम उठावेंगे शिर ऊपर तुम संतति की दिशमे। हो गु०।५। नमस्कार है चमत्कार कूं कीनी पूजा रसमे। कहे रामऋद्धिसार गुरु की आनंद मंगल जसमे हो गु०।६। श्लोक। वहु विधेश्वरुभिर्वटकैर्यकैः प्रचुर सर्पिपविपक्वसुखज्जकैः। शकल०। ॐ ह्रीं श्रीं प० नैवें द्यंनिर्विपामिते स्वाहाः ॥ ७ ॥ दोहा ॥ फल पूजा से फल मिले प्रगटे नवे निधान। चिंदिश कीरत विस्तरे पूजन करो सुजान ॥१ ॥ रथ चढ जदुनंदन आवत हे। ए चाल। चालो संघ सव पूजनकूं गुरु श मरयां सनमुख आवत हेरे ॥ चा० ॥ ५ ॥ ए आंक णी। आनंदपुर पट्टन को राजा गुरु शोभा सुण पा वत हेरे ॥ चा० ॥ भेज्या निज परधान वुलाणे नृप अरदास सुणावत हेरे ॥ चा० ॥ लाभ जांण गुरु नगर पधारे नृपत आय वधावत हेरे ॥ चा० ॥ राज कुमर को कुष्ट मिटायो अचरज तुरत दिखावत हेरे॥ चा० ॥ २ ॥ दश हज्जार कुटंव संग नृप कूं श्रावग धर्म धरावत हेरे ॥ चा० ॥ दया मूल आज्ञा जिनवर की वारे व्रत उचरावत हेरे ॥ चा० ॥ एसे च्यार राज समकित धर खरतर संघ वणावत हेरे॥ चा० ॥ ४ ॥ कुष्ट जलंधर दौण जगंदर केइयक लोक जीवावत हेरे ॥ चा० ॥ ब्राह्मन क्षत्री अरु

माहेश्वर ओसवंस पसरावत हेरे ॥ चा० ॥ ५ ॥ तीस हजार एक लख श्रावग महिमा अधिक रचा वत हेरे ॥ चा० ॥ कहत रामऋद्धिसार गुरु कूं फल पूजा फल पावत हेरे ॥ चा० ॥ ६ ॥ श्लोक ॥ फनस मोचसदाफल कर्कटै सुसुखदै किलश्रीफलचिर्भटै॥ शकल० ॐ ह्रीं ॥ प० ॥ फलं निर्वपामिते स्वाहा: ॥ दोहा॥ वस्त्र अतर गुरु पूजना चोवा चंदन चंपेल। दुस्मन सब सज्जन हुवे करे सुरंगा खेल ॥ १ ॥ मनस्रो किमहीन वाजे हो कुंथुजिन । ए चाल। लख मी लीला पावेरे सुंदर लखमी लीला पावे जे गुरु वस्त्र चढावेरे॥ सुं० ॥ सुजन अतर महकावेरे। सुं० । डुरजन शीश नमावेरे ॥ सुं० ॥ ए अंकणी। दरिया वीच जीहाज श्रावग की डूबण खतरे आवे। सांचे मन समरे सद गुरु कूं डुख की टेर सुणावे रे ॥सुं०॥ ॥ १ ॥ वाचंताव्याख्यानसूरीश्वर पंखी रूपे थावे। जाय समंद मे जीहाज तिराई फिर पीछा जब आवेरे।सुं०। ॥२॥ पूछे संघ अचरज मे त्यरीया गुरु सब वात सुणावेरे ॥सुं०॥ एसें दादा दत्त कुशल गुरु परचा प्रगट दिखावेरे ॥ सुं० ॥ ३ ॥ बोथर गूजरमल श्राव ग की दादा कुशल तिरावेरे ॥ सुं० ॥ सुखसूरि गुरु शमय सुंदर की जहाज अलोप दिखावे रे ॥ सुं० ॥ ॥ ४ ॥ ल० ॥ बारसें इग्यारे दत्तसूरि अजमेर अण सणठावे। जपज्यासौधर्मादेवलोके सीमंधरफुरमावेरे।

॥ सुं० ॥ ५ ॥ इक अवतारी कारजसारीमुक्ति नगर मे जोवेरे ॥ सुं० ॥ कुशल सूरि देराउर नगरे भुवनपती सुर थावेरे ॥ सुं० ॥ ६ ॥ फागण वदि अम्मावश सीधा पूनम दरश दिखावेरे ॥ सुं० ॥ मणिधारी दिल्ली मे पूज्यां शंकट सुपने नावेर ॥ सुं० ॥ ७ ॥ रथी उठी नही देख बादसाह बांही चरण पधरावेरे ॥ सुं० ॥ वस्त्र अतर पूजा सद्गुर की ऋद्धिशार मन भावेरे ॥ सुं० ॥ ८ ॥ श्लोक ॥ अखिल हीर शुचि नवचीरकै प्रवर प्रावरणै खलुगं धतः । शकल० ॐ ह्रीं ॥ श्रीप० ॥ वस्त्रं-चोवा-चंदन-पुष्पसारं-निर्विपामिते स्वाहाः ॥ दोहा ॥ ध्वज पूजा गुर राज की लहके पवन प्रचार । तीन लोक के शिखर पर पोहचे सो नर नार ॥१॥ चाल । जिन गुण गावत सुरसुंदरी रे । ए चाल । ध्वज पूजन कर हरख भरी रे ॥ध०॥सज सोले शिणगार सहेल्यां । श्री सद्गुर के द्वार खरी रे ॥ ध० ॥ अपछर रूप सुतन सुक लीनी ठम २ पग झणकार करी रे ॥ ध० ॥ १ ॥ गावत मंगल देत प्रदक्षणा । धन २ आनंद आज घरी रे ॥ध०॥ निर्धन कूं लखमी बगसावत पुत्र विना जाके पुत्र करी रे ॥ध०२॥जो जो परतिप परचा देख्या । सुणो भविक दिल वीच धरी रे ॥ध०॥फतेमल्ल भरूगतीया श्रावग पहली शंका जोर करी रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ परतिख देखूं जब मे जाणूं । प्रगट्यां ततखिण तरण

तरीरे ॥ ध० ॥ पुष्प माल शिर केशर टीका अधर श्वेत पोशाख करीरे ॥ ध० ॥ ४ ॥ मांग २ वर बोले वाणी । फरक बतावो गुरु मेघ जरीरे ॥ ध० ॥ फरक भगायो दोय लाख पर । तेरी महिमा नित्त हरीरे ॥ ध० ॥ ५ ॥ गैनचंद गोलेछा कूं तें । परतिख दीना दरस फरीरे ॥ ध० ॥ विक्रमपुर में थुंभ तुम्हारा । चित्र करावत सुर सुंदरीरे ॥ ध० ॥ ६ ॥ थानमल्ल लूण्यां पर किरपा । लखमी लीला सहज बरीरे । लखमीपति दूगड़की साहिब । हुंडी की भुगताण करीरे ॥ ध० ॥ ७ ॥ जो उपगार करचा तें मेरा । दीनी सनमुख अमृत जरीरे ॥ध०॥ तेरी कृपा सें सिद्धि पाई । जागे जस अरु भागे भरीरे ॥ ध० ॥ ८ ॥ भूखा भोजन तिसिया पाणी । भरत हाजरी देव परीरे ॥ ध० ॥ बिमुख बखत पर सहाय हमारे । ऋद्धिशार की गरज सरीरे ॥ ध० ॥ ए ॥ श्लोक ॥ मृदु मधुरध्वनि खिंखणी नादकै ध्वजविचित्रित विसृतवासकै । शकल० शिखरोपरि ध्वजां आरोपयामि स्वाहाः ॥ दोहा ॥ भट्टारक पदवी मिली, जीते वादी वृंद । कंठ विराजत सरस्वती, जग में श्री जिनचंद ॥ राग आसावरी ॥ अथवा ॥ धनाश्री ॥ पूजन जग सुखकारी सुगुरु तेरी पूजा० तेरे चरण कमल बलिहारी सु० । साहसलेम दिल्लीको बादस्या सुण के शोभ तिहारी । भट्ट हरायो चरचा करके

भट्टारक पद धारी ॥ सु० ॥ २ ॥ अम्मावशकी पूनम कीनी चंद उगायो भारी । चढके गगन करीहे चरचा सूरज से तप धारी ॥ सु० ॥ चौदेसे उगणीस साल में लखनेउ नगर मझारी । गोरा फिरंगी टोपीवाला दिलमें यह बात विचारी ॥ सु० ॥ ३ ॥ जैन सितंबर देव जो सच्चा पूरे मनसा हमारी । वाणी निकसी राज्य तुमारा होवेगा इधकारी ॥ सु० ॥ ४ ॥ अंधेकी खोली आंख सूरतमें पूजे सब नरनारी कहांलग गुण वरणूंमे तेरा तूं ईश्वर जयकारी ॥ सु० ॥ ५ ॥ उगणीसे संवत्सर त्रेपन सिगसर मासमझारी । शुक्ल दूज जिन चंद सूरिश्वर खरतर गच्छ आचारी ॥ सु० ॥ ६ ॥ कुशल सूरि के निज संतानी क्षेमकीर्ति मनुहारी । प्रति बोध्या जिन क्षत्री पांचसे ज्ञान सहित अणगारी ॥ सु० ॥ ७ ॥ क्षेमधारू शाखा जब प्रगटी जगमें आनंदकारी । धर्मशील साधू गुण पूरे कुशल निधान उदारी ॥ सु० ॥ ॥ ८ ॥ या पूजन करतां सुख आनंद धन धन लखमी सारी । कहत रामऋद्धिसार गुरूकी जय २ शब्द उचारी ॥ सु० ॥ ९ ॥ इति श्री समस्त दादा गुरु पूजा संम्पूर्ण ॥



श्रीदादाजीकी अष्टप्रकारी पूजा ॥

सकल गुणगरिष्ठान् सत्तपोभिर्वरिष्ठान् । शम दमयमनुष्ठांश्चारुचारित्र निष्ठान् । निखिल जगति पीठे दर्शितात्म प्रभावान् । मुनिप कुशलसूरीन् स्थापयाम्यत्र पीठे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिन कुशल सूरि गुरो अत्रावतरावतर स्वाहा ॥ इति आवाहनं ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिन कुशल सूरि गुरो अत्र तिष्ठ २ ठः ठः स्वाहा ॥ इति प्रतिष्ठापनं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिनकुशल सूरिगुरो अत्र मम सन्निहितोभव वषट्इति सन्निधी करणं ।३।

अथ अष्टप्रकारी पूजा ॥

(दोहा) गंगाजल तिम नृवलवलि । तीर्थोदक भरपूर । कलशभरी गुरु चरणपर । ढाले तस दुःख दूर ॥ १ ॥ (ढाल) देशी सूरती महीनांनी ॥ गंगाजल अति निरमल अमलसुं कमलें पूर । खीरो दधि वरदधि ज्यौं उज्जल जल भरपूर । तेह उद-कवलि तीर्थ नीर भरि कलश सनूर । गुरुचरणे जे ढाले टाले दुष्कृतदूर ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिन कुशलसूरिगुरु चरणकमलेभ्यः जलं निर्वपामिते स्वाहा ॥ इति जलपूजा ॥

—:❀❀❀:—

चंदन पूजा ॥

बावन्ना चंदन अगर । घस केसर घन सार । चरचै जे गुरु चरणनें । पामें जै जैकार ॥ १ ॥ (ढाल) मलयागर तिम अगर चंदन वलिकेसर सार । कस्तूरी अतिगंधे पूरी घसं घनसार । कुशल सूरि गुरुचरणे चरचै चढते चाव । सकल रोग तन सोग हरै वलि जस्ता चाव ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिन कुशल सूरिगुरुचरणकमलेभ्यः चंदनं निर्वपामिते स्वाहा ॥ ३ ॥ इति चंदन पूजा ॥

पुष्प पूजा ॥

केतकि चंपक फूलथी । पूजे जे गुरुपाय । तसु जशसूर उदेहुवे । अपजश तिमिर नसाय ॥ १ ॥ (ढाल) चंपक केतकि मरुबो दमन सेवंती फूल । जाई जूई मोगरो मालती तेम उफूल । कमल गुलाब चंपेली वेली परमलपूर । गुरुचरणे जे ढोवे होवे जश ज्यूं सूर ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिन कुशल सूरिगुरुचरणकमलेभ्यः पुष्पं निर्व्वपामिते स्वाहा ॥ इति पुष्पपूजा ॥

अक्षत पूजा ॥

उज्जल ज्यों शशि अंकबिण । खंण्डित नहीं विशाल । अक्षत गुरुचरणें ठवे । तसु घर मंगल माल ॥ १ ॥ (ढाल) ॥ सरल सुगंधित तंडुल

उजल जल उत्पन्न । ज्यूंवरं मोती छा ना हुंती उज्जालवन्न । जलधोई ससमोई सोई अक्षत नव्य । स्वस्तिक कुशल वधावे पावे मंगलभव्य ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिनकुशल सूरिगुरुचरणकमलेभ्यः । अक्षतं निर्व्वपामिते स्वाहा ॥ इति अक्षत पूजा ॥

दीप पूजा ॥

कंचन मणिमय रत्ननी । दीवी कर घृतपूर । वाती मौली सूतथर । करौ प्रदीप सुनूर ॥ १ ॥ (ढाल) कंचन घटित जटित गति नानाविध नवरत्न। दीवी अतिभारीगर कीवी अधिकै यत्न । घृतपूरी ससनूरी मौली वाती जोय। दीप करै गुरु आगै ज्योत उद्योती होय ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिन कुशल सूरि गुरुःचरण कमलेभ्यः दीपं निर्व्वपामिते स्वाहा ॥ इति दीपपूजा ॥

धूप पूजा ॥

बावन्ना चंदन अगर । सेल्हारस घनसार । धूपै जे गुरु धूपथी तस घर रिध विस्तार ॥ १॥ (ढाल) अगर चंदन सेल्हारस दारू छबीलो मेल । कपूर काचरी वालि घनसारे मृगमद भेल । धूप अखंग करी गुरु धूपै चढते चित्त । ते नरवित्त सुभारग पामैं नव नव नित्त ॥२॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिन कुशल सूरिगुरु चरण कमलेभ्यः धूपं निर्व्वपामिते स्वाहा ॥ इति धूपपूजा॥

नैवेद्य पूजा ॥

साल दाल पकवान घन। व्यंजन नव नव भांत। नेवज गुरु आगल ठवै। क्षुधा दोष उपसांत ॥ १ ॥ (ढाल) पेंडा मगद सेवइया लाडू मोतीचूर। खाजा ताजा लापसी दोठानें घृतपूर। पिस्ता दाख बिदाम छुहांरा पिंडखजूर। गुरुचरणे जे ढोवै भोग लहै भरपूर ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिन कुशल सूरिगुरुः चरण कमलेभ्यः नैवेद्यं निर्व्वपामिते स्वाहा इति नैवेद्यपूजा ॥ ७ ॥

फल पूजा ॥

श्रीफल सीताफल सदा। फल पुंगीफल लेय। ढोवै जे गुरु चरणपर। तसु उत्तम फल देय ॥ १ ॥ (ढाल) श्रीफल सीताफल नारंगी दाडम दाख। खरबूजा तरबूज जंभेरी पाखी साख। करुणा कवला केला नींबू फनस संफार। गुरु चरणे फल ढोई फल पामैं आकार ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिन कुशल सूरिगुरुः चरणकमलेभ्यः। फलं निर्व्वपामिते स्वाहा ॥ इति फल पूजा ॥

अर्घ पूजा ॥

(अथ कलश) दोहा। इम जिन कुशल सुरिंदनें पूजे आष्ट प्रकार। तसु घर नवनिधि संपजे। पुत्रादिक परिवार ॥ १ ॥ भट्टारक खरतर गछे। श्रीजिन लाभ-

सुरिंद ॥ रत्नराजमुनि भमरपर । सेवै पद अरविंद १॥ तासुचरण रजकणसमो । ग्यांन सार बुद्धिमंद ॥ श्री-सदगुरु पूजारची । सोधो कविजन वृंद ॥ २ ॥ इति श्री जिनकुशल सुगुरूणां अष्टप्रकारी पूजा ॥

अथ लघु अष्टप्रकारी पूजा लि० ॥

सुरनदी जल निर्मल धारया । प्रबल दुष्कृत दाघ निवारया । सकल मङ्गल वंछित दायकं । कुशल सूरि-गुरोश्चरणांजये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिनकुशल सूरिः चरण कमलेभ्यो जलं० यजामहे स्वाहा ॥

अथ चंदन पूजा ॥

मलय चंदन केशर वारिणा । निखल जाड्यरुजा तप हारिणा । सकल० ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिन कुशल सूरि गुरुः चरणकमलेभ्यो चं० यजा० स्वाहा ॥

अथ पुष्प पूजा ॥

कमल केतकि चंपक पुष्पकैः । परिमला हृत षट् पद वृंदकैः ॥ सकल० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिन कुशल सूरि गुरुः० ॥ पुष्पं यजा० स्वाहा ॥ ३ ॥

अथ अक्षत पूजा ॥

सरल तंडुल कैरित निम्मलै । प्रवर मोक्तिक पुंज-वदुज्वलैः । सकल मङ्गल० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं० जिन० गुरु० चरण० अक्षतं यजामहे स्वाहाः ॥

अथ नैवेद्य पूजा ॥

बहुविधैश्चरुभिर्वटकैर्यकैः । प्रवर मोदक पुंज सुखर्जकैः । सकल मङ्गल० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं० जिनकु० सूरि० गुरु० चरण० नैवेद्यं यजामहे स्वाहाः ॥

अथ दीप पूजा ॥

अति सुदीप्तमयै खलु दीपकैः । विमल कंचन भाजन संस्थितैः । सकल मङ्गल० ॐ ह्रीं श्रीं० जिन० सूरि० गुरु० चरण० दीपं यजामहे स्वाहाः ॥

अथ धूप पूजा ॥

अगर चंदन धूप दशांगजैः । प्रसरिता खिल दिङ्मुखकैः । सकल मङ्गल० । ॐ ह्रीं श्रीं० जिन० सू० चरण० धूपं यजामहे स्वाहाः ॥

अथ फल पूजा ॥

पनशमोच सदा फलकर्कटैः । सुसुखदैः किल श्रीफल चिर्भटैः । सकल मङ्गल० । ॐ ह्रीं श्रीं० जिन० सू० चरण० फलं यजामहे स्वाहाः ॥

अथ अर्घ पूजा ॥

जल सुगंध प्रसून सुतंडुलैश्चरु प्रदीपक धूप फलादिभिः । सकल० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं० । श्रीजिन कुशल सूरि० । अर्घं० यजा० स्वाहा ॥ इति ॥

॥ मंदिर में दरशन करनेकी विधिः ॥

इच्छा॥मिखमा० नमुत्थुणं० उवसग्ग० जयवीय० का उसग्ग के तीन नवकार गीणना—बाद थुई कहना

अथ अष्टमीस्तुतिः

चउवीसे जिनवर, प्रणमुं हुं नितमेव ॥ आठम दिन करियें, चंद्रप्रभुनी सेव ॥ मूरति मन मोहे जाणे पुनिम चंद ॥ दीठां दुःख जाये, पामे परमानंद ॥ १ ॥ मिलि चोसठ इंद्र, पूजे प्रभुजीना पाय॥ इंद्राणी अपछर, कर जोडी गुण गाय ॥ नंदीश्वर द्वीपें मिलि सुरवरनी कोड ॥ अठाइ महोछव, करता होडा होड॥ २॥ शत्रुंजा शिखरें, जाणी लाभ अपार ॥ चउमासें रहिया, गणधर मुनि परिवार ॥ भवियणने तारे, देई धरम उपदेश ॥ दूध साकरथी पण, वाणी अधिक विशेष ॥ ३ ॥ पोसो पडिक्कमणुं करियें व्रत पच्चक्खाण ॥ आठम तप करतां, आठ करमनी हाण॥ आठ मंगल थाये, दिन दिन कोडि कल्याण ॥ जिन सुखसूरि कहे, इम जीवत जनम प्रमाण ॥ इति अष्टमी स्तुति ॥

॥ शत्रुंजय स्तवन ॥

शेत्रुंजय ऋषभ समोसरया । भला गुण भरयारे । सीधा साधु अनंत । तीरथ ते नमुंरे । तीन कल्याणक तिहां थया । मुगतें गयारे । नेमीसर गिर-

नार ॥ ती० ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो। गिरि सेह रेरे। भरतें भराव्या बिंब ॥ ती० ॥ आबू चौमुख अतिभलो। त्रिभुवन तिलोरे। विमल वसइ वस्तु पाल ॥ ती० ॥ २ ॥ समेतशिखर सोहामणो। रली यामणोरे। सीधा तीर्थंकर वीश ॥ ती० ॥ नयरी चंपा निरखीये। हीये हरखीयेरे। सीधा श्री वासु पूज्य ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्वदिशें पावापुरी। ऋद्धें भरीरे मुक्ति गया महावीर ॥ ती० ॥ जेशलमेर जुहारीयें दुःख वारीयेंरे। अरिहंत बिंब अनेक ॥ ती० ॥ ४॥ बीकानेरज वंदीयें। चिरनंदीयेंरे। अरिहंत देहरा आठ ॥ ती० ॥ सोरिसरो शंखेश्वरो। पंचासरोरे। फलोधी थंभणपाश ॥ ती० ॥ ५ ॥ अंतरीक अंजा-वरो। अमीजरोरे। जीरावलो जगनाथ ॥ ती० ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरो। जात्रा करोरे। राणपुरें रिसहेस ॥ ती० ॥ ६ ॥ श्रीनाडोलाई जादवो। गोडी स्तवोरे ॥ श्रीवरकाणो पाश ॥ ती० ॥ नंदीश्वरनां देहरा। बावन भलारे। रुचक कुंडले चार चार ॥ ती० ॥ ७ ॥ शाश्वती अशाश्वती। प्रतिमा छतीरे। स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ ती० ॥ तीरथ जात्राफल तिहां। होजोमुज इहांरे। समय सुंदरकहे एम ॥ ती० ॥ ८ ॥

अथ श्री पार्श्वजिन स्तवन।

जय २ श्रीजिन राय। जग जन अन्तर जामी।
तारण तरण जिहाज। परमातम परिणामी ॥ १ ॥

परम पुरुष परमेस । परमानंद प्रधान । परम प्रकाश विसेस । निरमल ज्ञान निधान ॥ २ ॥ जगपति पास जिणंद । प्रभु तुझ हो उपगारी । सुनियै सेवक जान । ऐसी अरज हमारी ॥ ३ ॥ मोह महामद भूलि । मैं वहुकाल गमायो । निज परभाव विवेक । सुद्ध सुभाव नपायो ॥ ४ ॥ निरमल चेतन भाव । कर्म कलंकित कीनो । ताकारण गुण छोडि । पर औगुण चित दीनो ॥ ५ ॥ निज अवगुण सुणिकान । दिलमें रोस भराउं । अछता निज गुणगान । सुनिवैकुं उमाहूं ॥ ६ ॥ आश्रव पांचे असुद्ध । दिलसें दूर न जावे । कुमति कदाग्रह जोग । समता सुद्ध न आवै ॥ ७ ॥ अव कतु पुण्य संयोग । प्रभु तुम मुद्रा देखी । सुद्ध अध्यातम लीन । भाव असुद्ध उवेखी ॥ ८ ॥ निरखि २ प्रभुबिंब । मनमें आनंद पाऊं । गाऊं तुझगुणग्राम । देव अवर नावि चाहुं ॥ ९ ॥ करुणाकरि प्रभुमुझ । आतम निरमल कीजे । सुद्ध दसा प्रगटाय । मोह विकलता छीजै ॥ १० ॥ भव २ निजपद सेव । प्रभु सेवककुं दीजै । श्री जिन भक्ति पसाय । सुमति विलाश वरीजे ॥ ११ ॥ इति श्री पार्श्वजिन स्तवनं ॥ ४ ॥

अथ श्रीमहावीरजिन छंद ॥

सेवो वीरनें चित्तमां नित्यधारो । अरिक्रोधनें मनथी दूरवारो । संतोष वृत्ती धरो चित्तमांहिं । राग

द्वेषथी दूर थाओ उछांहिं ॥ २ ॥ पड्या मोहना पासमां जेह प्राणी । शुद्ध तत्वनी वात तेणें न जाणी मनु जन्म पामी वृथा कां गमोठो । जैन मार्ग छंडी जुलाकां जमोछो ॥३॥ अलोजी अमानी निरागी तजोठो । सलोजी समानी सरागी जजोछो । हरी हरादि अन्यथी शुं रमोछो । नदी गंग मूकी गलीमां पडोछो ॥ ३ ॥ केइ देव हाथें असि चक्र धारा । केइ देव घाले गले रुंरुमाला । केइ देव उत्संगें राखे छे वामा । केइ देव साथें रमें वृंद रामा ॥ ४ ॥केइ देव जपे ले ई जपमाला । केइ मांसजक्षी महाविक्राला। केइ योगिणी जोगिणी जोगरागें । केइ रुद्राणी छागनो होम मांगे ॥ ५ ॥ इसा देव देवी तणी आश राखे । तदा मुक्तिनां सुःखने केम चाखे । जदा लोजना थोकनो पार नाव्यो । यदा मधनो बिंडुओ मननाव्यो ॥६॥ जेह देवलां आपणी आश राखे। तेह पिंरुनें मन्नशुं लेख चाखे। दान हीननी जीरु ते केम जाजे । फुटो ढोल होये कहो केम वाजे ॥ ७ ॥ अरे मूढ ब्राता जजो मोक्ष दाता । अलोजी प्रजूने जजो विश्वख्याता । रत्न चिंता मणि सारिखो एह साचो। कलंकी काचना पिंरुशुं मत राचो ॥ ८ ॥ मंद बुद्धी जेह प्राणी कहे छे । सवि धर्म एकत्व जूलो जमेछे । कीहां सर्षवाने कीहां मेरु धीरं । कीहां कायरानें कीहां शूरवीरं ॥ ए ॥ कीहां स्वर्णथालं कीहां कुंज-

आधार ॥ जि० ॥ ३ ॥ राय नें रंक सरिखा गणेंरे । उद्योतें शशि सूर । गंगाजल ते बिहु तणोरे। ताप करे सवि दूर ॥ जि० ॥ ४ ॥ सरिखा सहुने तारवा रे। तिम तुमे छो महाराज । मुजशुं अंतर किम करो रे। बांह ग्रह्यानी लाज ॥ जि० ॥ ५ ॥ मुख देखी टीलुं करे रे । तेनवि होय प्रमाण । मुजरो माने सवि तणो रे । साहिब तेह सुजाण ॥ जि० ॥ ६ ॥ वृषभलंछन माता सत्यकी रे। नंदन रुक्मणी कंत । वाचक जश इम वीनवे रे। भय भंजन भगवंत ॥ जि० ॥ ७ ॥ इति ॥

अथ श्रीराणकपुरजीनुं स्तवन।

श्रीराणपुरो रलीयामणुंरे लाल । श्रीआदीसर देव। मन मोह्युंरे। उत्तंग तोरण देहरुंरे ला० ॥ निरखीजें नित्यमेव ॥ म० ॥ १ ॥ चउवीश मंरूप चिहुं दिशेंरे ला० ॥ चउमुख प्रतिमा चार ॥ म० ॥ त्रिभुवनदीपक देहरेंरे ला० ॥ समोवरू नहीं संसार ॥ म० ॥ श्री० ॥ २ ॥ देहरी चोराशी दीपतीरे ला० ॥ मांड्यो अष्टापद मेर ॥ म०॥ भले जुहास्या भोयरारे ला० ॥ सूतां ऊठी सवेर ॥ म० ॥ श्री० ॥ ३ ॥ देश जाणीतुं देहरुंरे ला० ॥ मोटो देशमेवारू ॥ म०॥ लख्ख नवाणुं लगावियारे ला० ॥ धन धन्नो पोरवारू ॥ म० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ खरतर वसई खांतशुंरे ला० ॥ निरखंतां सुख थाय ॥ म० ॥ पांच